नमो लोक माता

प्रि. बेअंत कौर

Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library

Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library has been created with the approval and personal blessings of Sri Satguru Uday Singh Ji. You can easily access the wealth of teaching, learning and research materials on Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library online, which until now have only been available to a handful of scholars and researchers.

This new Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library allows school children, students, researchers and armchair scholars anywhere in the world at any time to study and learn from the original documents.

As well as opening access to our historical pieces of world heritage, digitisation ensures the long-term protection and conservation of these fragile treasures. This is a significant milestone in the development of the Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-Library, but it is just a first step on a long road.

In order to continue conserving, digitising and publishing our numerous literature online, we are asking for your support and involvement.

Please join with us in this remarkable transformation of the Library. You can share your books, magazines, pamphlets, photos, music, videos etc. This will ensure they are preserved for generations to come. Each item will be fully acknowledged.

Digitising our treasures is an ambitious undertaking. Every page, every object, must be photographed individually and with great care. The whole photographic process including lighting, colour temperature, and environmental controls must all be precisely regulated. Post processing is also done with meticulous care including orientation, de-skewing, sizing and finally quality control to ensure the documents reflect the true state of the originals.

To continue this work, we need your help

Your generous contribution and help will ensure that an ever-growing number of the Library's collections are conserved and digitised, and are made available to students, scholars, and readers the world over. The Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-Library collection is growing day by day and some rare and priceless books/magazines/manuscripts and other items have already been digitised.

We would like to thank all the contributors who have kindly provided items from their collections. This is appreciated by us now and many readers in the future.

Contact Details

For further information about the process or your contribution - please contact

Email: NamdhariElibrary@gmail.com

kirpal singh chana

नमो लोक माता

लेखिका की अन्य रचनाएँ :

१ सूबा गन्डा सिंह (जीवन कथा) – १९९०
२ सतिगुरू प्रताप सिंह जी अते होले महह्ले (घटनाएँ) – १९९१
३ लाल ऐहि रतन, भाग–१ (उपदेश) – १९९५
४ दरसनु देहु दइयापति दाते (बारहमाह) – १९९६
५ लाल ऐहि रतन, भाग–२ (उपदेश) – १९९९
६ इहि सुन्दरि सयाम की मान तमै (बारहमाह) – १९९९
७ बचित्र नाटक–एक अपूर्व कृति (गुरूवाणी) – १९९९
८ The Namdhari Sikhs (History) - 1999
९ सुन्दर श्याम (बारहमाह) – २०००
१० दरस प्यासी – २०००
११ नमो नाथ पूरे – २००१
१२ लाल ऐहि रतन, भाग–३ (उपदेश) – २००२
१३ लाल ऐहि रतन, भाग–४ (उपदेश) – २००३
१४ बचित्र नाटक–एक अद्वितीय रचना (गुरूवाणी) – २००३
१५ आदि शक्ति – २००३
१६ लाल ऐहि रतन, भाग–५ (उपदेश) – प्रकाशन अधीन

नमो लोक माता

प्रिं. बेअन्त कौर

आरसी पब्लिशर्ज, चांदनी चौंक, नई दिल्ली–६

Namo Lok Mata

By
Pr. Beant Kaur
F213 A-1, Mansarover Garden,
New Delhi - 110015

2003

प्रकाशक : आरसी पब्लिशर्ज,
चांदनी चौंक, नई दिल्ली–११० ००६
☎ 23280657

मुद्रक : आरसी प्रिंटिंग एजेन्सी,
चांदनी चौंक, नई दिल्ली–११० ००६

सैटिंग : एस आर एस कम्प्यूटर,
नई दिल्ली, ११० ०१५.
☎ 25422956

मूल्य : ६० रु

विषय सूची

यह पुस्तक श्री गुरू गोबिन्द सिंह द्वारा रचित दशम ग्रंथ साहिब जी में संकलित वाणी चंडी चरित्र पर आधारित है। इस पुस्तक में गुरमुखी लिपि में लिखित गुरूवाणी को देवनागरी लिपि में लिखने का प्रयास किया गया है। आशा करती हूँ कि पाठक जन इसका शुद्ध उच्चारण करके आनंदित होंगे।

— लेखिका

दो शब्द

माता का स्मरण करते ही वह साक्षात मूरत आँखों के समक्ष साकार हो उठती है जो असीम वात्सल्य, स्नेह व ममता से सराबोर है। उसके दर्शन करके मन तृप्त, आनंदमग्न, निश्चिंत व शांत हो उठता है जैसे सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति हो गई हो। जब दैवी गुणों से सम्पन्न अध्यात्मिक व रूहानियत से भरपूर आदि शक्ति, जगत माता, लोक माता, उस अकाल पुरूष प्रभु की शक्ति स्वरूपा, मुख्य निज़ वजीरन, निकटवर्ती, अलख करतारनी, निरंजन स्वरूपा, हरि-हरि का जाप करने वाली देवी भगवती, परम प्रज्ञा माता का साक्षात्कार श्री गुरू गोबिंद सिंह जी स्वयं रचित दशम ग्रंथ साहिब में करानें की कृपा करें, तो फिर पाठक अति कृत-कृत्य, निहाल और विस्मादित हो उठता है। ये लोक माता सारे विश्व को उत्पन्न करती है, पालन पोषण करती है और भली प्रकार से प्रतिपालना करती है। समूचा विश्व उसके प्रचण्ड तेज और प्रकाश से प्रज्जवलित हो रहा है; उसका सभी के ह्रदयों में निवास है।

- **तुही सभ घटन मो निरालम प्रकासी।।**
- **तुही घट घटे देवि दुरगे अनूपा।।**
- **तुही विश्व भरणी तूही जग प्रकासी।।**
- **तुही जग सकल महि रमंती अनूपं।।**

इस लोक माता की महिमा अनंत व अपरम्पार है। वह समूचे विश्व को आवश्यक वस्तुएँ प्रदान करके उसकी संभाल करती है।

तुही जगत जननी अनंती अकालं।।
तुही अंन दैनी सभन को समालं।।

जगत जननी अपने बच्चों की संभाल बड़े ही सुचारू ढंग से करती है और उन्हें भली प्रकार से सुरक्षा प्रदान करती है। वह अति कृपालू, दयालू और परोपकारी है।

तुही भरण पोखण सभन पर कृपाली।।

लोक माता जगत में विचर रहे जीवों के पापों का खंडन करती है और सारे विश्व का भरण पोषण करती है।

–तुही पाप खंडन उदर जगत भरणी।।
–तुही सभ जगत की करहि प्रतिपाली।।
–तुही सभ जगत के करहि सिद्ध काजा।।

रिद्धियों सिद्धियों की स्वामिनी, भगवती माता सारी सृष्टि के दुखों, कष्टों, पीड़ा, आदि व्याधियों क्लेषों व भ्रमों और हर प्रकार के दुखों का नाश करके सारे संसार में सुखों को उजागर करती है।

नमो दोख दाही नमो दुखय हरता।।

इस तरह जगत जननी, आनंदायनी, आनंदमयी जगत माता की छत्र छाया तले सम्पूर्ण सृष्टि, समूची मानवता व सारी सरंचना का पालन पोषण हो रहा है।

आदि शक्ति दुर्गा माता सतयुग, त्रेता, द्वापर सभी युगों में किसी न किसी रूप में विचरती हुई अपनी कृपा मात्र से अपने अपने भक्तों का उद्धार करती है। श्री गुरू गोबिंद सिँह अपने पूर्वजन्म से दुष्ट-दमन के रूप में दुर्गा माता के सान्ध्यि में हैं। भाई संतोख सिँह जी श्री गुरू प्रताप सूरज में इस भेंट वार्ता को इस प्रकार लिखते हैं। देवी रक्तबीज नामक दैत्य से युद्ध करते करते असंख्य दैत्यों का संहार करके वहाँ से अदृश्य हो गई और उसने विघ्यांचल पर्वत पर जा कर निवास किया। वहाँ आसीन होकर घोर तपस्या में लीन हो गई। राक्षसों ने देवी की खोज शुरू कर दी परंतु वह उसे ढूंढने में असफल रहे। समुंड ऋषि समाधिस्थ रूप से तपस्या में लीन थे। दैत्यों ने ऋषि के

पास पहुँच कर देवी के बारे में अपशब्द कहे। समुण्ड ऋषि ने उन राक्षसों को देवी की उपमा व अपार शक्ति के बारे में बताया परंतू वे घूर्त दैत्य, देवी की उपमा को सहन न कर सके और समुण्ड ऋषि को मारने के लिये दौड़े। ऋषि ने अंर्तध्यान होकर अकाल पुरूष प्रभु की अराधना की और खाल के बने हुये आसन को जिस पर वह स्वयं बैठे हुये थे, उसे झटका झंझोड़ा। तत्पश्चात उसमें से बहुत तेज प्रताप वाले धनुषघारी पुरूष का अवतरण हुआ और उसने राक्षसों से युद्ध करना प्रारंभ कर दिया। यह महायुद्ध दस लाख पाँच हजार वर्ष तक चलता रहा। उघर देवी अपनी तपस्या पूर्ण करके शस्त्र घारण कर युद्ध में कूद पड़ी, परिणाम स्वरूप अति भयंकर युद्ध हुआ जिसमें आदि शक्ति और उस घर्नुघारी महापुरूष ने मिलकर राक्षसों को मौत के घाट उतार दिया। देवी ने प्रसन्न होकर उस महापुंरूष को यह वचन दिया।

भाई संतोख सिंह जी ने इसका वर्णन गुरू प्रताप सूरज में इस प्रकार किया है।

–हे तपसी के तपु पुरशोतम अभिनासी की अंस समेत।
– कीनसि बहु सहाइता मेरी हति कै दैत भीम समुदाइ।
एक बेर तुम मोहि बुलावहु तबि आवहुंगी मै हरखाइ।
मेरी बहु प्रसंनता तुव पर बरंब्रहू लिहु जिम उर आइ।
अबि सरीर जो धारनि कीनो चीरंजीव होवहु सुख पाइ।
जदा चहहु चित तदा तिआगहु लाखो संमत जरा न आइ।
तपन तपहु अति उग्र तेज हुइ दुष्ट दमन निज नाम धराइ।
– दुष्ट दमन ते देवी सुनि करि कही भविक्खयत बात सुनाइ।
पूरब भाग चतुरथे जुग को तबै समो अैसो बनि आइ।
मोहि अवाहन को तुम करि हो अभ बांछति बर को चित चाहि।
मै तबि शबद प्रकाशनि करकै प्रविशावो सबि बिधि तुम माहि।

देवी ने प्रसन्नता पूर्वक उस परम योद्धा के साथ यह वादा किया कि जब भी वह उनका आहवान करेंगे, वह उन्हें हर्षित होकर दर्शन देंगी। तत्पश्चात उसने इस शूरवीर, योद्धा का नाम

दुष्ट दमन रख दिया तथा साथ ही, ज़रारहित दीर्घायू भोगने का वरदान भी दिया। देवी ने फिर भविष्यवाणी करते हुए दुष्ट दमन को कहा कि जब वह कलयुग में प्रकट होंगे, तब उनके पुकारने पर वह उनके समक्ष प्रकट होंगी तथा उनके मनोरथ की पूर्ति करेंगी। कलयुग में समुंड ऋषि श्री गुरू तेग बहादुर जी के रूप में अवतरित हुये और दुष्ट दमन ने श्री गुरू गोबिंद सिँह जी के रूप में अवतार लिया।

जिस समय श्री गुरू गोबिंद सिँह जी ने इस धरती पर अवतार धारण किया उस वक्त जुल्म, अन्याय व अत्याचार का साम्राज्य छाया हुआ था। निर्दोष लोगों को पीड़ित किया जा रहा था। कई प्रकार के कष्ट दिये जा रहे थे और समकालीन शासन व्यवस्था में सभी को इस्लाम धर्म कबूल करने के लिये विवश किया जा रहा था। जनसाधारण को कोई राह नहीं सूझ रही थी। इस प्रकार की लूटमार और अत्याचार से दुखित व असहाय प्रजा श्री गुरू गोबिंद सिँह जी की शरण में गई। गुरू जी ने गंभीरता पूर्वक सोच विचार कर ये निर्णय लिया कि इस समय में शस्त्रधारिणी चण्डी माता की सहायता की अति आवश्यकता है। इस संकटग्रस्त समय में आदि शक्ति देवी माता ही सहायक बन सकती है। इस लिये उनकी आराधना की जाये। एक वही है जो रणभूमि के कार्यों को सिद्ध कर सकती है। इस के लिए मलेच्छ, दुर्बुद्धि वाले, दुष्टों का अंत करने हेतु जगत माता की पूजा अर्चना उपासना अति आवश्यक है। भाई संतोख सिँह जी गुर प्रताप सूरज में इस प्रकार लिखते हैं–

तुमरे हित जगमात मनावौं।
पूज महां कलि महिं बिदतावौं।

जगत माता को प्रसन्न करने के प्रयत्न आरंभ कर दिये गये। श्री गुरू गोबिंद सिँह जी ने केशवदास पंडित जो कि चण्डी देवी का अत्यंत श्रद्धालू भक्त था को बुलाया गया और चण्डी देवी को प्रकट करके दर्शन करने का मनोरथ स्पष्ट किया गया। इस सम्पूर्ण कार्य को विधि पूर्वक, मर्यादानुसार

करने का निश्चय किया गया। पंडित जी ने एक लाख रूपये की दक्षिणा के रूप में सदगुरू जी से मांग की और आवश्यकतानुसार धूप, दीप, हवन सामग्री आदि के लिये याचना की, जिसकी स्वीकृति उसको दे दी गई। इस कार्य का शुभारंभ बैसाख की पूर्णिमा, बृहस्पतिवार को नैना देवी के पर्वत पर, प्रातः काल में हुआ। सदगुरू जी हवनकुंड के समीप, आसन पर शोभायमान होकर पाँच प्रहर तक ध्यानमग्न रहते। इस समय के अंतराल में सदगुरू जी अल्प आहार करते और धरती पर ही तनिक विश्राम कर लेते। ये सिलसिला लगातार पाँच महीनों तक चलता रहा। एक बार रात्रि में देवी माता ने सदगुरू जी को स्वप्न में दर्शन दिया और कहा–

हे सुत होमहु मंत्र समेता। धरहु धयान मुझ आवनि हेता।
समो होइ दरशन को जबै। ऐक वार आवौं चलि तबै।
सफल मनोरथ करहुं तुहारा। दै हौं बर जिम रिदै मझारा।

उस दिन के उपरांत श्री गुरू गोबिंद सिँह जी बारह-बारह प्रहर निरंतर हवन करते हुए देवी माता के चरणों में आराधना करते रहते। हवन स्थल ही उनका निवास स्थान बन गया और वह हर प्रकार के मौसम को स्वयं पर सहन करते। तत्पशचात फाल्गुन मास आ गया। आप जी ने निद्रा का त्याग कर दिया और हर समय देवी माता की स्तुति, अनेक नामों व विशेषणों से करने लगे और ब्रह्म कवच का जाप भी किया। चैत्र मास में शुभ शगुनों का आधिक्य यहां तक हो गया कि हवन की लपटें स्वयं ही प्रज्वलित हो उठती। केशव दास पंडित ने कहा कि अब दर्शनों का समय बहुत समीप आ गया है। दर्शनों की अभिलाषा और तीव्र हो उठी। अनेक मण घी व सामग्री ने वातावरण को सुगन्धित व मनोहर बना दिया। इस प्रकार के शोभनीक व रमणीक वातावरण में से देवी जी के दर्शनों की सुगन्ध महकने लगी। दर्शनों की कामना और अधिक तीव्र हो उठी। अमावस्या के बाद नवरात्रे आये। गुरू जी एक ही आसन पर एकाग्रचित होकर ध्यानमग्न रहते। खाना, पीना त्याग दिया

और हर पल देवी माता की प्रतीक्षा में व्यतीत होने लगा। जब अष्टमी का दिन आया, उस स्थान पर भूकम्प आने शुरू हो गये। भयभीत लोग वहाँ से भाग खड़े हुए। पंडित केशव दास भी तीव्र भूकम्प आते देखकर भयभीत हो गया और वहाँ से भाग गया। सदगुरू जी अकेले ही वहाँ पर रह गये और अडिग अपने आसन पर विराजमान होकर यज्ञ करते हुए चण्डी माता की स्तुति करते रहे। रविवार को जब प्रभात हुई, प्रकृति ने अपने जलवे दिखाना आरंभ कर दिया। जहाँ गुरू जी अपने आसन पर विराजमान थे, वहाँ बहुत तेज बिजली चमकती, उसकी गड़गड़ाहट से विद्युत कौंध उतपन्न होता। भूकम्प से धरती अस्थिर हो रही थी। बादल प्रबल वेग से गर्जना कर रहे थे। परन्तु सद्‌गुरू जी अडिग स्मरण में लीन थे। इस प्रकार सारा दिन भूचाल आते रहे; मेध गरजते रहे; आंधी तूफान ने सारे वातावरण में हलचल पैदा कर दी। परन्तु सद्‌गुरू जी अडोल, शांत चित, ध्यानमग्न रहे, देवी जी की स्तुति हेतु मंत्र का जाप करते रहे और निरंतर हवन का प्रवाह चलता रहा। इस तरह सारा दिन व्यतीत हो गया, और संध्या बेला का प्रहर आ गया, उस समय–

प्रगटी जगरानी, सभि गुन खानी, जनबरदानी, भूर प्रभा।

देवी माता बहुत भयानक और विकराल रूप मे प्रकट हुई। गुरू जी ने जगदम्बा की जै-जै कार का उद्‌घोष किया और उसके उस रूप को अपने हृदय में धर कर नेत्र मूँद लिए।

हाथ जोरि सनमुख ही रहे। रिदे मनोरथ देवी लहे।
पलटयो चतरभुजी पुन रूप। कंचन बरनी भई अनूप।
चड़ही सिंघ पर आयुध धरे। चार चंद्र भाला छबि भरे।
मांग पुत्र देवों अबि तोही। सेवा करति रिझायो मोही।

सदगुरू जी की सेवा सफल हुई, भक्ति और आराधना ने देवी माता के दर्शनों का सौभाग्य प्रदान किया। अतः देवी माता ने अपने प्रिय पुत्र की भक्ति पर प्रसन्न हो कर उसे मनोवांछित वरदान मांगने के लिये आग्रह किया।

श्री गुरू गोबिंद सिँह जी ने देवी माता से निम्नलिखित वर मांगे।

दिहु बर माता पंथ उपावउ। तुरक राज को तेज खपावउ।
हिंदु धरम नित होइ बिनाशे। जिह बचाइ पुनि करौं प्रकाशे।
तुम कर ते अस आयुध पावहु। जिह पखारि निज पंथ पिलावों।
जिस ते धारहि तेज कराला। जीतहि सत्रनि बली बिसाला।
सदा सहाइ पंथ की कीजै। दिन प्रति पधै इही बर दीजै।
तोहि चरित्र बसहि मन मेरे। सिमरों जिन कौ संझ सवेरे।

इस प्रकार श्री गुरू गोबिंद सिँह जी ने मनोवांछित वरदान देवी माता से प्राप्त किये और धर्म का मार्ग प्रशस्त करने, संतों की रक्षा करने और दुष्टों को समूल से उखाड़ फैंकने के शुभ कार्य में लग गये।

दसम ग्रंथ साहिब में संकलित वाणी बचित्र नाटक में श्री गुरू गोबिंद सिँह जी अपने पूर्व जन्म की कथा लिखते हैं कि उन्होंने अकाल पुरूष प्रभु, महाकाल और कालिका माता की आराधना व सुयोग्य साधना कर उन्हें अतिप्रसन्न किया।

–तह हम अधिक तपसिआ साधी।।
महांकाल कालका अराधी!।
–सरब काल है पिता अपारा।।
देबि कालका मात हमारा।।

इस प्रकार श्री दसम ग्रंथ साहिब जी के पृष्ठ लोक माता की उपमा व ख्याति से परिपूर्ण हैं। अकाल उसतत के २० छंदों में आदि शक्ति की महिमा का गुणगान है। बचित्र नाटक और ज्ञान प्रबोध के कई छंदों में भगवती माता की महत्ता का वर्णन है।

चण्डी चरित्र उक्त बिलास, चण्डी चरित्र दूसरा और चण्डी दी वार में विस्तार सहित लोक माता के अनन्त गुणों का वर्णन है। चण्डी चरित्र, उक्त बिलास में ८ अध्याय और २३३ छंद हैं। चण्डी चरित्र दूसरा के २६२ छंद हैं। चण्डी दी वार में ५५ पउड़ियां संकलित हैं। उपरोक्त रचनाओं मे दुर्गा माता ने

महिषासुर, धूम्रलोचन, चंडमुंड, रक्तबीज, बिड़ालाछ, शुंभ निशुंभ, करूराछ नामक दैत्यों का संहार किया, जिसका वर्णन वीर रस से भरपूर शैली में किया गया है। ये सभी रचनाएँ चण्डी देवी की अगाध महिमा और जै-जै कार से ओत प्रोत है। कृष्णावतार, पारसनाथ का अवतार, ४०४ पख्यान चरित्रों में प्रथम और अंत के चरित्र में आदि शक्ति माता की महिमा को बड़े रोचक व सुंदर शब्दावली द्वारा चित्रित किया गया है। यदि इन सभी रोचक कौतुकों का वर्णन किया जाये तो एक बहुत बड़े आकार के ग्रंथ का निर्माण हो जायेगा। इस पुस्तक 'नमो लोक माता' में आदि शक्ति की स्तुति का यथासंभव संक्षेप रूप में वर्णन करने का प्रयास किया गया है। और फिर उस विशाल, अथाह, गहन-गंभीर सागर रूपी आदि शक्ति चंडी माता का भेद कौन पा सकता है। यह वह भक्ति रचना है जो चंडी चरित्र के अंत में चंडी माता की जै-जै कार करते हुए ह्रदय की गहराई, भावावेश को श्रद्धा के रूप मे प्रकट करती है। इसमें व्यक्त किये गये ह्रदय के गहरे भावों व आवेग को हिन्दी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास किया गया है ताकि पंजाबी भाषा का ज्ञान न होने पर भी पाठक इस स्तुति का आनंद लेने से वंचित न रह जायें।

मैं अति कृतज्ञ हूँ डॉ० मनमोहन सहगल की जिन्होंने इस पुस्तक का पठन करके आदि शक्ति दुर्गा माता के चरणों में श्रद्धा के पुष्प अर्पित किये हैं।

अंत में, पुस्तक लिखते हुए यदि अशुद्धियां, त्रुटियां रह गई हों तो मैं क्षमा की याचिका हूँ।

प्रिं. बेअन्त कौर
एफ २१३, ए–१,
मानसरोवर गार्डन,
नई दिल्ली–११००१५

एक झलक

भारतीय आस्था परमात्मा के मातृ-रूप में भी उसी परम स्वरूप का दर्शन करती है, जिसका गुणगान उपनिषद्कार ने *'एष सर्वेश्वर एष सर्वज्ञ एषोऽन्तर्याम्येष योनिः सर्वस्य प्रभावप्ययौ हि भूतानाम* अर्थात् यह ब्रह्म ही सब भूतों की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय का स्थान है, वही सर्वज्ञ, अन्तर्यामी सब संसार का कारण भूत तथा सबका ईशवर है कहकर किया है। मातृ रूप में जब सर्वज्ञाता, सर्वप्रदाता और सर्वनिर्माता को देखा जाता है तो एक परम शक्ति की कल्पना जागृत होती है, जिसके क्रोड़ में सर्वात्मा तो सुरक्षित है ही, मात्र उसके स्तुति-गान से ही त्रिविधताप का नाश होकर उद्गाता उन स्वर्गिक लोकों में सुखी जीवन जीने लगता है, जिनका सर्जन परमेश्वर ने जीव कल्याणार्थ किया है। यों भी हमारे यहां शक्ति को मातृ रूप में ही देखा गया है, क्योंकि जीवात्मा जो ब्रह्म का अंश है, माता की गोद में ही पूर्ण सुरक्षा का अनुभव करता है। सांसारिक शक्तियों में प्रायः बुद्धिबल, धनबल और भुजबल की कल्पना की जाती है। भारतीय सोच ने इन तीनों प्रकार के बलों या शक्तियों को मातृ रूप प्रदान कर इनकी आराधना की है, क्योंकि उसी में लोक-मंगल की कल्पना साकार होती है। बुद्धिबल को सरस्वती माता, धनबल को लक्ष्मीमाता और भुजबल को दुर्गामाता के रूप में भारतीयों ने पूजा और उनकी संरक्षण छाया में अपने को सुरक्षित जाना। गुरु गोबिंद सिंह ने विपरीत परिस्थितियों में राष्ट्र, धर्म और जाति की रक्षा का बीड़ा उठाया था। उसके लिए उन्हें शक्ति अर्जित करने में ही समाधान दीख पड़ता था। लोक समाज को साथ लेकर उसे अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध आवाज़ उठाने का प्रशिक्षण देने का दायित्वं भी उन्होंने

ओढ़ा था। यद्यपि, जैसा कि 'बिचित्र-नाटक' में उन्होंने इंगित किया है वे अकाल पुरूष की शक्तियों से सुसज्जित होकर धरती के अन्याय, अत्याचार, अर्धम का नाश करने को अवतरित हुए थे, तथापि लोक-दृष्टि में उनके द्वारा शक्ति का आहवान परिस्थिपि जन्य अनिवार्यता और अध्यात्म के बाहरी धेरे में लोक-मानस को आकर्षित करने की सहज आवश्यकता थी। अतः गुरु जी ने उक्त समूची आवश्यकताओं को पहचान कर अपने उपदेशों एवं काव्य-रचना में मातृशक्ति का आहवान किया। महायज्ञ रचकर पर्वत प्रदेश के वासियों की आस्था को और अधिक जागृत किया, भगवती भवानी का गुणगान किया-कराया, दुर्गा के विभिन्न रूपों की स्तुति की, उसके महाक्रत्यों का स्मरण किया एवं अपने अनुयायियों में शक्ति के क्रोड़ में आकर अपने को सुरक्षित महसूसने की भावना जागृत की। परिणामतः गुरु गोबिंद सिंह की रचना में मातृशक्ति के प्रति पूजा-अर्चना का काव्य एवं दुर्गा भवानी का महिमा-गान तथा प्रशस्ति के असंख्य छन्दों की अभिवयंजना।

प्रस्तुत रचना 'नमो लोक माता' में लेखिका प्रिंसिपल बेअंत कौर ने गुरु जी कृत 'दशम ग्रंथ' में आए आदि शक्ति की महिमा के पदों, विशेष वाणियों और जगज्जननी भवानी के प्रति अभिव्यक्त मनाद्गारों का बड़ी श्रद्धा और भक्ति से अध्ययन प्रस्तुत किया है। गुरु गोबिंद सिंह इस परम मातृशक्ति को जगत की उत्पादिका, अनन्त, अकाल और सर्वसंरक्षिका शक्ति के रूप में अपनी आराध्यदेवी स्वीकार करते हैं। समूचा विश्व उसी के प्रचण्ड तेज और आलोक से प्रकाशमान है। जन-जन के मन-मन में विश्व की मातृशक्ति प्रदीप्त है। वह जो **'जग सकल वहि रमंती अनूप'**, 'विश्व भरणी', 'जग प्रकासी', और 'सभन पर कृपाली' है। उसकी शरण में जीवात्मा निर्भीक और माता की गोद में शिशु की तरह चपल रह सकता है। इसी लिए गुरु जी उस आद्या के सम्मुख नमन करते हुए उसे संसार के दुखों का दहन करके मानवता के लिए परम सुख को उजागर करने वाली कहकर पुकारते हैं।

नमो दोख दाही नमो दुखय हरता।।

माता दुर्गा चारों युगों में अपने भक्तों का उद्धार करती रही है। स्वयं गुरु जी ने पूर्वजन्म में देवी भवानी को दैत्यों के संग युद्ध में सहयोग दिया था। देवी ने तभी उस महापुरूष को यथासमय (कलियुग में) शक्ति प्रदान करने एवं वरदान देने का वचन दिया था। वर्तमान जन्म में अपनी कथा लिखते हुए गुरु गोबिंद सिंह ने बड़े स्पष्ट शब्दों में चण्डी भवानी को अपनी माता स्वीकार किया है–

सरब काल है पिता अपारा।। देबि कालका मात हमारा।।

यहाँ के अत्याचारों से मुक्ति पाने के लिए तथा 'परित्राणाय साधुनाम् विनाशायच दुष्कृताम्' उन्हे शत्रुपर जिस परम चण्ड आघात करने भी आवशयकता थी, उसकी पूर्ति के लिए माँ के आशीर्वाद और सर्वशक्तिमत्ता का आहवान अनिवार्य हो गया था। तभी गुरु जी ने परम भक्ति, सेवा और दैन्य के साथ माँ को पुकारा। दयालु, कृपालु, करूणामयी जगतमाता ने प्रकट होकर अपने प्रिय पुत्र को सान्त्वना दी और मनोवांछित वर मांगने को कहा। गुरु जी ने विनती की–

दिहु वर माता पंथ उपावउ।।तुरक राज को तेज खपावउ।।
हिंदु धरम नित होइ बिनाशे।।जिह बचाइ पुनि करों प्रकाशे।।
तुम करते अस आयुध पावहु।।जिह परवारि निज पंथ पिलावों।।
जिस ते धरहि तेज कराला।।जीतहि सत्रनि बली बिसाला।।
सदा सहाइ पंथ की कीजै।। दिन प्रति पधै इहि बर दीजै।।
तोहि चरित्र बसहि मन मेरे।।सिमरों जिन कौ संझ सवेरे।।

–भाई संतोख सिंह

वरदान भी उन्हें अवश्य प्राप्त हुआ होगा, तभी तो उसके पश्चात गुरु जी ने एक के बाद एक अनेक युद्धों में विजय प्राप्त की; लेकिन वे विजय-दायिनी माँ को भूले नहीं। मात-भवानी को विषय बनाकर लिखी गई रचनाओं से इतर गुरु जी ने अपनी अधिकतर रचनाओं में या तो मंगलाचरण के तौर पर भवानी का प्रशस्ति-गान किया, या रचना की सफलता के लिए परम मातृ-शक्ति से वरदान माँगा है। प्रस्तुत रचना में उक्त समस्त प्रशस्तियों,

विनतियों और वर-याचनाओं की विवेचना की गई है।

पुस्तक 'नमो लोक माता' का आरम्भ आदि शक्ति की महिमा से किया गया है। गुरु जी की तीन महत्वपूर्ण रचनाएं माता भवानी को ही केन्द्र में रखकर की गई मिलती है—चण्डी चरित्र उक्ति बिलास, चण्डी चरित्र दूसरा एवं वार श्री भगउती जी की। इनमें 'वार श्री भगउती जी की' पंजाबी भाषा की रचना है अन्य दो ब्रज भाषा में हैं। संस्कृत रचना 'दुर्गा सप्तशती' इन तीनों का आधार ग्रंथ है। इन रचनाओं में गुरु जी ने माँ दुर्गा की वीरता, निर्भीकता, दैत्य-संहार और असुरों के गर्व को चूर-चूर करने की अनेक धटनाओं और कथाओं का उदधाटन किया है। शुंभ-निशुंभ, धूम्रलोचन, महिषासुर, रक्तबीज आदि असुरों के साथ शौर्य की देवी भवानी के युद्धों और देवी के हाथों एक-एक करके सबका वध उक्त दोनो रचनाओं में चित्रित किया गया है। देवी के महत् कार्यों की स्तुति करने और रण-बांकुरी वीरता के शब्द-चित्र गुरु जी ने प्रस्तुत किए हैं, उक्ति बिलास चण्डी चरित्र के अन्त में तो वे अपनी देवी माँ से युद्ध में विजय पाने और विपरीत परिस्थितियों में भी शुभ कर्मों को कर सकने की सामर्थ्य-प्राप्ति का वरदान मांगते हैं—

देहि शिवा बर मोहि इहै।।शुभ करमन ते कबहूं न टरों।।
न डरों अरि सों जब जाए लरों।।निसचै कर अपनी जीत करों।।
अरु सिख हौं अपने ही मन को।।एह लालच हउ गुन तउ उचरौं।।
जब आव की अउध निदान बने।।अति ही रन मै तब जूझ मरौं।।

गुरु गोबिंद सिंह ने चण्डी चरित्र के पाठ का महात्म्य भी सशक्त शब्दों में उजागर किया है। लेखिका ने अपनी पुस्तक में पाठकों का ध्यान इस और विशेष रूप से इंगित किया है।

जे जे तुमरे धिआन को नित उठि घ्यए हैं सन्त।।
अंत लहैंगे मुकति फलु पावहिंगे भगवंत।।

वार भगउती जी की में भी पाठ करने वाले की मुक्ति का दावा किया गया है।

दुर्गा पाठ बणाइआ सभे पउड़ीआ।।
फेर न जूनी आइआ जिन इह गाइआ।।

गुरु जी की रचनाओं यथा ज्ञान प्रबोध, कृष्णावतार, पारसनाथ अवतार, उग्रदंती, पाख्यान चरित्र, आदि में भी लेखिका श्री मति बेअंत कौर ने माँ भगवती की ओर गुरु जी की वृत्ति को इंगित किया है। अपनी रचना का श्री गणेश करते हुए वे प्रायः **'प्रथम धरो भगवति को धयाना / बहुर करो कबिता बिधि नाना'** मंगला चरण के तौर पर इस प्रकार की पंक्तियां लिखते हैं। 'श्री कृष्णावतार' में तो दुर्गा का स्पष्ट कीर्तिगान गुरु जी ने किया है। समस्त गोप-गोपिकाएं अष्टभुजी की आराधना करते हैं।

आठ भुजा जिह की जग मालुम।।
सुंभ संधारन नाम जिसी को।।
साधन दोखन की हरता।।
कबि स्याम न मानत त्रास किसी को।।
सात अकास पतालन सातन।।
फैल रह्यो जस नाम इसी को।।
ताही को पूजन दयोस लगयो।।
सभ गोप चले हित मान तिसी को।।

गुरु जी ने पाख्यान-चरित्रों में भी सर्वप्रथम पख्यान माता चण्डी की स्तुति में लिखा है। 'उग्रदंती' वाणी की जो पुरानी पाण्डुलिपियां अब प्राप्त हुई हैं, उनमें भी माँ भवानी का विशेष स्मरण किया गया दीखता है। आरम्भ में ही विनती की गई है–

सुणहु तुम भवानी हमन की पुकारे।।
करहु दास पर मिहर अपरं अपारे।।

दुर्गा माता ही सबकी रक्षक है, मुक्ति दायिनी है और जिसे अपने अँचल का आश्रय प्रदान करती है, वह संसार के आवागमन-दुख से मुक्त हो जाता है। इस रचना में आदि शक्ति को देवकी, नैणा देवी, राधा, रूक्मिणी, कौशल्य, अंजनी, अहिल्य रूप भी स्वीकारा है, और साथ ही नरसिंह अवतार, कच्छ अवतार, वाराह अवतार, बावन अवतार, परशुराम तथा श्री राम के रूप में कार्य-रत दिखाया है। वास्तव में गुरु जी द्वारा अपनी रचनाओं में माँ भगवती को आदि शक्ति, सर्वशक्ति मती, सबकी जननी, पोषिका और संहारिका दिखाना यह सिद्ध करता है कि

परमेश्वर को मातृ शक्ति के रूप में भी गुरु जी ने अपना आराध्य स्वीकार किया है, और निरन्तर अपनी रचनाओं में उसे पूजा-अर्चना, कीर्ति-प्रशस्ति, महिमा-गान, भजन-सिमरण आदि का आलम्बन बनाया है।

श्रीमती बेअन्त कौर ने गुरु जी की इस वृति को पहचाना है और एक सच्चे शोधार्थी की तरह न केवल उस वृति को उजागर ही किया है, बल्कि गुरु जी की समस्त रचनाओं में जहां जहां वह वृत्ति दीख पड़ती है, उसकी सविवेक खोज करके माँ शक्ति के प्रति भी श्रद्धांजलि प्रस्तुत की है।

पुस्तक 'नमो लोक माता' के अन्तिम अंग में लेखिका ने दुर्गा माँ के वाहन 'सिंह' का रूप-चित्रण एव विशिष्टताओं का उद्घाटन भी किया है। यहीं गुरु गोबिंद सिंह रचित मूल वाणी में से माँ भवानी की जय-जयकार में प्रस्तुत ३७ छंद अर्थ-सहित संकलित किए हैं। विशिष्टता यह है कि मूल वाणी के स्तुति-पदों का अनुवाद हिन्दी में कि या गया है। ऐसा करने से माँ के कीर्ति-गान को समझने वालों का घेरा व्यापक बन गया है। लेखिका इसके लिए बधाई की पात्रा है।

पुस्तक के आखिरी पन्नों में चण्डी चरित्र की स्तुति में लिखे पांच छंद एव एक दोहा, अर्थ-सहित, जोड़कर लेखिका ने चण्डी को श्रद्धांजली भेंट की है। दोहे में तो चण्डी-चरित्र के पाठ के फल की बात कही गई है जो कि भारतीय धार्मिक काव्यों की एक रूढ़ि है, और सिक्खों को आस्था-पूर्वक चण्डी-चरित्र का पाठ करने के लिए आहवान करती है।

'नमो लोक माता' एक उत्तम कोटि की शोधपूर्ण रचना है, जिसे पेश करके श्रीमती बेअन्त कौर की अनुभवी लेखनी ने लोक को चमत्कृत कर दिया है। पुस्तक सर्वथा पठनीय और संग्रहणीय है। और इस महत्वपूर्ण रचना के लिए मैं लेखिका को हार्दिक बधाई देता हूँ।

डॉ० मनमोहन सहगल
अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
पंजाबी युनिवर्सिटी, पटिआला

नमो लोक माता

दशमेश पिता श्री गुरू गोबिंद सिँह जी द्वारा रचित श्री दशम ग्रंथ साहिब जी, वह बृहत कोष है जिसमें से अनेक प्रकार के हीरे, मोती, लाल, जवाहर प्राप्त करके जिज्ञासु धनधान्य से परिपूर्ण हो जाता है। उसे अपनी अनमोल संजो कर रखी हुई विरासत प्राप्त हो जाती है। वह अपने प्रिय सद्‌गुरू की कृपा से, जैसे-जैसे इस महान अध्यात्मिक ग्रंथ का पठन आरंभ करता है वह भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वादिष्ट रसों से भाविभोर होकर झूम उठता है, आनंदमग्न हो जाता है तथा प्रसन्नचित हो अपने प्यारे इष्ट का धन्यवाद करते हुए आत्मिक मंडलों में विचरण करना आरंभ कर देता है।

आदि शक्ति की महिमा

जापु साहिब और अकाल उस्तति आदि शक्ति की महिमा का साक्षात्कार करवाने वाली सर्वश्रेष्ठ व उत्तम रचनाएँ हैं। भक्तजन अपने प्रिय सद्‌गुरू की स्तुति की शब्दावली को ऊँचे स्वर में उच्चारण करते हुए सहज ही अपने प्यारे सद्‌गुरू के सन्मुख नतमस्तक हो जाता है और उसकी कृपा द्वारा अपार खुशियों के खजाने से परिपूर्ण हो जाता है। उसकी तृष्णाओं का अंत हो जाता है। उसकी जन्म-ज्मांतरों की प्यास तृप्त हो जाती है। वह तू ही, तू ही का उच्चारण करते हुए अपने पूज्य प्रीतम के साथ अभेद हो जाता है, उस प्रभू की कृपा से उसे सब कुछ प्राप्त हो जाता है।

बचित्र नाटक श्री गुरू गोबिंद सिँह जी की अनुपम अद्वितीय रचना है। इसमें गुरू गोबिंद सिँह जी विस्तार पूर्वक अपने पूर्व जन्म की कथा का वर्णन करके सोढी और बेदी वंश को श्री रामचंद्र जी के वंश से जोड़ देते हैं। चंडी चरित्र उक्त बिलास, चण्डी चरित्र दूसरा और वार श्री भगौती जी की, चण्डी दी वार जगत माता दुर्गा की वीरता पूर्ण महान उपलब्धियों से ओत प्रोत है। जिसमें दुष्ट दैत्यों का गर्व चूर-चूर हो जाता है और पराजित देवताओं को देवी की कृपा से पुनः स्वर्ग के वैभव का रसास्वादन प्राप्त होता है। ज्ञान प्रबोध में राजा जनमेजा की कथा का विस्तार पूर्वक वर्णन किया है। चौबीस अवतार नामक रचना में विष्णु जी के अवतारों व लीलाओं का रौचक शैली में वर्णन किया गया है। ब्रह्मावतार में ब्रह्मा जी के अवतारों का वर्णन किया गया है। रुद्र अवतार में भी दत्तात्रेय व पारसनाथ की कथा का विस्तार है। शब्द हजारे, सवैये, खालसा महिमा, उस अकाल पुरूष की महिमा का, खालसे के गुणों का गायन व बखान करते हैं। शस्त्र नाम माला में युद्ध में प्रयोग होने वाले सभी शस्त्रों का विस्तार पूर्वक वर्णन निहित है। ४०४ पाख्यान चरित्रों में कुटिल स्त्रियों और पुरुषों की धूर्तताओं को दिखाते हुए अपने अनुयायियों को सजग रहने की चेतावनियाँ दी हैं। अंत में, जफरनामा नामक रचना ओरंगजेब के कपाट खोल देती है। इस महान ग्रंथ की समाप्ति अस्फोटक कबित्तों द्वारा होती है।

इस तरह पाठक कहीं उस अकाल पुरूष प्रभु के चरणों में जुड़े हुए उच्च अध्यात्मिक मंडलों का विचरण करते हुए रूहानियत की राहों का राही बन जाता है। कहीं पूज्य जगत जननी दुर्गा माता के चरणों में करबद्ध नतमस्तक कृपा और बख़्शिश की ओट में रहते हुए जीवन के दुर्लभ क्षणों को सुखमयी बना लेता है। कहीं अपने पूर्वजों की अमीर विरासत को प्राप्त करके गौरव का अनुभव करता है। कहीं विष्णु जी के महान अवतारों के

भिन्न-भिन्न रूपों में विचरण करते हुए लीलाओं के मधुर रस के साथ मग्न होकर झूम उठता है। कहीं भांति-भांति के शस्त्रों का ज्ञान विस्मादित करता है। कहीं श्री कृष्ण जी की गोपियों के साथ रास लीलाएँ पुलकित करती हैं। कहीं गोपियों को विरह वियोग की पीड़ा की कसक का अनुभव करते हुए मन सजल हो उठता है; कहीं खालसे की महिमा का गुणगान करके पाठक अनुग्रहित होता है; कहीं पुरुषों और त्रियाचरित्रों का पठन करके समाज में प्रचल्लित कुरीतियों के बारे में जानकारी प्राप्त करता है। इस तरह पाठक एक बार ही नहीं अपितु बार-बार इस महान और अद्वितीय ग्रंथ का पठन करके अपने जीवन के मुश्किल व कठिनाई से भरपूर क्षणों को सहज ही सुखद बना लेता है।

अकाल उसतत

इस महान अपूर्व, अद्वितीय ग्रंथ में जगत माता दुर्गा के दर्शन अनेक बार होते है। गुरू जी बड़ी सुंदर, प्रभावशाली शब्दावली द्वारा सर्वशक्तिमान पूज्य देवी माता के गुणों का बखान करके उनसे साक्षत्कार कराते हैं। सर्वप्रथम दशम ग्रंथ में संकलित रचना अकाल उस्तत में देवी माता की महिमा का वर्णन है। सद्गुरू जी ने अकाल पुरूष प्रभु की स्तुति करते हुए त्रिभंगी छंद में भगवती माता की जै जै कार की है। वह आदि शक्ति दुष्टों के दलों को नष्ट करने वाली व नरक के कष्टों का निवारण करने वाली है। उसकी महिमा अपरम्पार है। वह युद्ध का मंड़न करने वाली बलवान शक्ति है, वह भक्तों की कल्याणकारिणी संतों को सुख देने वाली है। उसकी ज्योति प्रचंड है। उसकी प्रभा भानू के समान है। वह विष्य विकारों को नष्ट करने वाली है। देवी माता अगम, अथाह, अकाल पुरूष की शक्तिस्वरूपा होकर विराजमान हो रही है। वह आदि कुमारी, अगाध वृति वाली है। वह सुबुद्धि प्रदान करने वाली, दुर्मति का

दमन करने वाली है। वह रोग, शोक को दूर करने वाली, तर्क विर्तक का नाश करने वाली, खुशियां व आनंद प्रदान करने वाली और आदि-अगाध कथा वाली है। वह आदि शक्ति धर्म की घ्वजा का रूप है। वह सब का आदि रूप, अगाध, अगण्ति अतुलनीय है।

आदि अनादि अगाध अछे।।

वह आदि काल से ही अनश्वर व गहन है।

आदि अनील अगाध अभे।।

वह सब का मूल, आदि रहित व निर्भय है।

आदि अनादि अगाध उरं।।

भक्तों ने उसको आदि काल से ही अनादि, अगाघ जानकर अपने ह्वदयों में बसाया हुआ है।

आदि जुगादि अगादि गते।।

सभी लोग आदि जुगादि से उस अगाध गति वाली देवी की जै जै कार कर रहें हैं।

खत्रीआणि खतंगी अभै अभंगी
आदि अनंगी अगाधि गते।।

वह आदि शक्ति क्षत्रियों वीरों की तरह बलशाली व आन बान वाली है। वह धनुष धारिणी, अभयशक्ति, नाशहीन है, वह आदिकाल से ही निराकार, आदि-अनादि व अगाध गति वाली है।

श्री गुरू गोबिंद सिँह जी अपनी अपूर्व कृति बचित्र नाटक में बड़े स्पष्ट शब्दों में आदि शक्ति देवी माता से अपना संबंध दर्शाते हैं।

सरब काल है पिता अपारा।।
देबि कालका मात हमारा।।

जो सर्वकाल है, जिसका अंत नहीं पाया जा सकता, वह मेरा पिता है, अकाल पुरूष की महाशक्ति देवी कालका मेरी माता है। गुरू साहिब को आदि शक्ति देवी माता के बारे में पूर्ण

जानकारी प्राप्त थी, इसलिए बचित्र नाटक के अंत में लिखते है–

पहिले चंडी चरित्र बनायो।।
नख सिख ते क्रम भाख सुनायो।।

चंडी चरित्र

इसके उपरांत आप जी देवी दुर्गा माता के आश्चर्यमय कौतुकों का, अपनी विलक्षण रचना चण्डी चरित्र, उकति बिलास, फिर चण्डी चरित्र दूसरा और चण्डी दी वार, में विस्तार सहित वर्णन करते है। आप जी अकाल पुरूष की कृपा चाहते हुए उनसे चण्डी माता जी की शुभ कथा की रचना की आज्ञा मांगते हैं–

क्रिपासिंध तुमरी क्रिपा जौ कछु मो पहि होइ।।
रचो चंडका की कथा बाणी सुभ सभ होइ।।

चण्डी माता की ज्योति सारे जगत में जगमगा रही है। उसका तेज प्रचंड है वह नव खंड पृथ्वी को शोभायमान कर रही है। वह दुष्टों दैत्यों का संहार करने वाली है। उस अकाल पुरूष ने देव दानव दोनो उत्पन्न किये। फिर उन दोनों में परस्पर द्वन्द बढ़ाकर, युद्व करवाया और स्वयं अंतर्निहित होकर जगत तमाशा देखा।

बैर बढाइ लराइ सुरा सुर आपहि देखत बैठ तमासा।।

दैत्यों ने स्वर्ग में अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया और देवताओं को वहां से निकाल दिया, देवता असहाय व् हीन हो गये व भाग कर शिवपुरी में निवास किया। इस प्रकार कुछ समय बीत गया। एक दिन देवी माता स्नान करने नदी पर आई तब देवताओं ने माता की विधि पूर्वक सेवा अर्चना व पूजा की। उन्होंने अपनी सारी व्यथा देवी मां को कह सुनाई व माता के चरणों में विनती की–

कीजै सोई बात मात तुम कउ सुहात सभ।।

सेवकि कदीम तक आए तेरी साम है।।

दुर्गा देवी ने देवताओं की पुकार सुनकर असुरों को नष्ट करने का दृढनिश्चय कर लिया तब देवी माता के संकल्प करते ही अस्त्र, शस्त्र, शंख, सिँह इत्यादि उनके पास पहुँच गये और सिँह देवी माता का वाहन बना। अष्ठभुजा धारिणी देवी माता अपने हाथों में अस्त्र, धंटा, गदा, त्रिशूल, तलवार, शंख, धनुष बाण और भयानक चक्र धारण कर सुसज्जित हो गई। दूसरी तरफ दानवों ने भी युद्ध की तैयारी कर ली और युद्व के मैदान में कूद पड़े। दुर्गा और दानवों का भीषण संग्राम हुआ। दुर्गा ने अनगिणत शूरवीर दैत्यों का संहार कर दिया। महिषासुर ने बलपूर्वक युद्व किया, अंतत; वह युद्व करता हुआ देवी माता के हाथों मारा गया। देवताओं की प्रसन्नता का ठिकाना ना रहा। देवी माता देवताओं को स्वर्गपुरी सौंपकर स्वयं अलोप हो गई। जिस स्थान पर शिव जी समाधिस्थ थे वहां जाकर प्रकट हो गई।

शुंभ निशुंभ व अन्य कई दैत्य इन्द्र की विजय को सहन ना कर सके और एक बार फिर उन्होंने एकत्र होकर इन्द्र को घेर लिया तथा युद्व करके इन्द्र को रणभूमि से भगा दिया, इन्द्र का सर्वस्व राज्य छीन कर वहां अपना अधिपत्य स्थापित कर दिया। शुंभ निशुंभ ने त्रिलोक को जीतकर अपने अधीन कर अपना राज्य स्थापित कर लिया। एक बार फिर भयभीत देवताओं ने दुर्गा माता की शरण ली और देवी के चरणों में अपनी पराजय की व्यथा कह सुनाई व सहायता की याचना की। देवी ने देवताओं की दुख भरी पुकार सुनकर एक बार फिर राक्षसों का संहार करने का प्रण किया।

दुर्गा माता अति सुंदर रूप धारण करके सुमेरू पर्वत की चोटी पर विराजमान हुई। देवी माता का स्वरूप व प्रचण्ड तेज असहनीय था। उसी समय शुंभ का भाई निशुंभ किसी कारण वश वहां से निकला। वह देवी माता की सुंदरता का तेज सहन

न कर सका और वह मूर्च्छित होकर गिर पड़ा। होश में आने पर उसने देवी माता के चरणों में अपने भाई नृप निशुंभ के साथ विवाह का प्रस्ताव रखा। उसने कहा कि उसका भाई निशुंभ तीनों लोकों का स्वामी है। दुर्गा माता ने उत्तर दिया कि वह केवल उसी का वरण करेगी जो उसे युद्ध में पराजित कर सके। दानव शुंभ अति प्रसन्न हो अपने भाई के पास गया व उसे देवी माता के साथ हुई सारी वार्ता कह सुनाई तथा उसके सुंदर रूप का वर्णन किया। यह सुनकर निशुंभ ने यह निर्णय लिया कि किसी चतुर दूत को भेजकर देवी माता को बुला लिया जाये। इस कार्य का उत्तरदायित्व धूम्रलोचन नामक दैत्य ने लिया। उसने राजा से कहा कि पहले तो वह बातों से रिझाकर उसे राजा के पास ले आयेगा। यदि वह न मानी तो युद्ध करके जीत कर ले आयेगा।

धूम्रलोचन अपनी चतुरंगिनी सेना लेकर दुर्गा माता की तरफ चल दिया। कैलाश पर्वत पर पहुँच कर उसने दुर्गा माता को ऊँची आवाज़ में ललकारा। उसकी ललकार सुनकर देवी माता अति क्रोधित होकर, सिँह पर सवार होकर, सशस्त्र युद्ध के मैदान में कूद पड़ी। भयंकर संग्राम हुआ। धूम्रलोचन ने दुर्गा माता पर कई बार प्रहार करने का प्रयास किया परंतु सब निष्फल रहा। अंततः देवी ने अपने हाथ में खड़ग धारण कर तीव्र वेग से शत्रु का शीश काट दिया। तत्पश्चात असुर सेना रणस्थल में व्याकुल होकर हा-हाकार कर उठी। दुर्गा माता के नेत्रों से क्रोध भरी ज्वाला निकली और धूम्रलोचन की सारी सेना जलकर राख हो गई उसमें केवल एक ही दैत्य बच निकला, जिसने सारा वृतांत नृप शुंभ को जाकर कह सुनाया।

शुंभ अति क्रोधित हुआ और चंड-मुंड नामक दो दैत्यों को दुर्गा माता से युद्ध करने के लिए भेजा। चंड मुंड अपने सबल व प्रचंड सैन्यबल सहित दुर्गा माता से युद्ध करने के लिए पहुँच

गये। उधर दुर्गा देवी भी अपने शस्त्रों से सुसज्जित होकर शंखध्वनि करती हुई रणस्थल की ओर आगे बढ़ी। सर्वप्रथम मुंड से भयंकर युद्ध हुआ और देवी दुर्गा ने अपनी तलवार से मुंड का सिर धड़ से अलग कर दिया, अब चंड वध का कार्य शेष था। उसने भी दुर्गा पर कई प्रकार से प्रहार करने के प्रयास किये परंतु वह स्वयं ही दुर्गा माता की बरछी से मारा गया।

अनेक धायल हुए दैत्यों ने नृप शुंभ को चंड और मुंड के मारे जाने की वार्ता कह सुनाई। शुंभ और निशुंभ ने यह विचार विर्मश किया कि इस कार्य के लिए रक्तबीज को भेजना चाहिए, वह चण्डिका को पहाड़ से नीचे गिराकर मार देगा रक्तबीज ने विशाल दैत्यसेना लेकर चंडी माता पर आक्रमण कर दिया। बड़ा घमासान हुआ, अनेक दैत्य ज़ख्मी हुए और अनेक मारे गये। रक्तबीज ने अति क्रोधित हो दुर्गा माता से प्रचंड युद्व किया। चण्डी देवी ने अत्यंत क्रुद्व होकर रक्तबीज पर तीर चलाया और वह मूर्च्छित होकर गिर पड़ा। होश में आने पर पुनः उसने चंडिका पर तलवार से वार करने के प्रयास किये, अर्थात भयंकर युद्व हुआ। रक्तबीज का रक्त धरती पर गिरते ही उन रक्त की बूंदों से अनेकों रक्तबीज पैदा हो गये। दुर्गा माता ने उन सब का अपने तीरों से संहार कर दिया। जैसे-जैसे दुर्गा माता रक्तबीज के रक्त से पैदा हुए दैत्यों को मारती गई वैसे-वैसे उनके रक्त से फिर और दैत्य पैदा होते गये। दैत्य रक्त की बूंदों से बनते जा रहे है और यह सिलसिला काफी देर तक चलता रहा। अंत में देवी ने दैत्यों का वध करने के लिये अपने मस्तक में से भयानक ज्वाला निकाली और उस ज्वाला में से कालिका देवी प्रकट होकर रणभूमि में आ गई। रक्तबीज के रक्त की जितनी बूँदें धरती पर गिरती कालिका उन सब का रक्त पान करती जाती। फिर देवी ने अपनी तलवार से ऐसा वार किया कि रक्तबीज का सिर धरती पर गिर पड़ा। इस

प्रकार चंडिका और कालिका दोनो ने मिल कर क्षण भर में रक्तबीज को दैत्य सेना सहित मार कर विनाश कर दिया। कुछ धायल हुए दैत्यों ने राजा शुंभ को रक्तबीज की मृत्यु की खबर कह सुनाई।

शुंभ और निशुंभ ने क्रोधित होकर दुर्गा माता के साथ युद्ध करने का निर्णय कर लिया। दोनो दैत्य अपनी बलशाली सेना सहित रणस्थल में प्रविष्ट हुए। अत्यंत भीषण संग्राम हुआ देवी चंडी और कालिका दोनो ने दैत्यों को खण्ड-खण्ड करके मार गिराया। चंडी माता ने कुपित होकर निशुंभ का अपनी खड़ग से वध कर दिया।

जब शुंभ ने निशुंभ के मारे जाने की बात सुनी तो वह बदले की भावना मन में लिए अति तीव्र वेग से युद्ध स्थल पर आ पहुँचा। सभी दैत्यों ने दुर्गा माता को घेर लिया । दुर्गा माता ने कालिका देवी को संकेत दिया कि अब सभी दैत्यों को समाप्त करने का समय आ गया है। युद्धस्थल में शस्त्र वर्षा शुरू हो गई। चंडिका ने अपने हाथों में शुंभ को उठा लिया और वह उसके हाथों से छूट कर धरती पर गिर पड़ा और फिर आकाश में चला गया। दुर्गा माता ने उसका पीछा किया और नभमंडल के बीचो बीच चंडिका ने अपूर्व युद्ध किया। चंडिका ने तलवार से शुंभ के दो टुकड़े कर दिये, तब वह धरती पर गिर पड़ा। सभी दैत्य रणभूमि छोड़ कर भाग खड़े हुए। देवते अति प्रसन्न हुए चारो दिशाओं में देवी की जै-जै कार गुंजायमान होने लगी।

इस तरह श्री गुरू गोबिंद सिँह जी चंडी चरित्र उक्ति बिलास के अंत में अति सुंदर शब्दों में देवी माता से वर मांगते हैं।

देह शिवा बर मोहि इहै
शुभ करमन ते कबहूँ न टरों।।
न डरों अरि सों जब जाए लरों
निसचै कर अपनी जीत करों।।

अरु सिख हौं अपने ही मन को
एह लालच हउ गुन तउ उचरौं।।
जब आव की अउध निदान बनै
अति ही रन मै तब जूझ मरों।।

हे परम पुरूष कल्याणकारी शक्ति शिवा कृपा पूर्वक मुझे यह वरदान दो कि मैं शुभ कार्य करने से कभी ना हिचकिचाऊँ। रण क्षेत्र में शत्रु से कभी ना डरूँ और निश्चयपूर्वक युद्व को अवश्य जीतूं। मैं अपने मन को यह शिक्षा दूँ और मुझे यह लालच हो कि मैं तुम्हारे ही गुणों का उच्चारण करता रहूँ। तथा जब मेरा अंतिम समय आ जाये तो मैं युद्व स्थल में धर्म की रक्षा करते हुए प्राणों का त्याग करूँ।

चंडी चरित्र का महात्म

अंत में श्री गुरू गोबिंद सिँह जी चंडी चरित्र पढ़ने का महात्म्य वर्णित करते हैं।

जहि नमित पड़ै सुनि है नर
सो निसचै करि ताहि दई है।।

जो प्राणी जिस भावना के निमित इस कथा को निश्चय पूर्वक पढ़ेगा या सुनेगा, दुर्गा माता उसकी मनोकामना को उसकी इच्छा अनुरूप अवश्य पूर्ण करेगी। चंडी चरित्र दूसरे के अंत में गुरू जी इस रचना का पाठ करने का महात्म्य, इस प्रकार वर्णित करते हैं–

पड़े मूड़ याको धनं धाम बाढे।।
सुनै सूम सौफी लरै जुद्ध गाढे।।
जगै रैणि जोगी जपै जाप याको।।
धरै परम जोगं लहै सिद्धता को।।

अगर कोई मूर्ख भी चंडी चरित्र का पाठ करेगा तो उसके घर में धन धान्य की वृद्धी होगी। यदि कोई महा कायर इसका पाठ सुनेगा तो उसमें युद्व करने की क्षमता आ जायेगी तथा जो

योगी इसका जाप करेगा, वह रात भर जाग कर आलस्य से दूर रहेगा व चेतन रहेगा, वह परमयोग एवं सिद्दि को प्राप्त करेगा।

पड़ै याहि बिद्धयारथी बिदय हेतं।।
लहै सरब सासतरान को मद्ध चेतं।।
जपै जोग सनयास बैराग कोई।।
तिसै सरब पुंनयान को पुंन होई।।

जो विद्यार्थी विद्या प्राप्ति के लिए इसको पढ़ेगा, वह सारे शास्त्रों के सिद्वांत, ज्ञान व चेतना प्राप्त कर लेगा। इसको योगी, सन्यासी, वैरागी जो भी पढ़ेगा; उसको सर्व सुखों की प्राप्ति होगी।

।।दोहरा।।

जे जे तुमरे धिआन को नित्त उठि धिऐ हैं संत।।
अंत लहैंगे मुकति फलु पावहिंगे भगवंत।।

हे दुर्गा माता ! जो जो संत, भक्त नित्य प्रातःकाल तुम्हारी आराधना व् घ्यान करेंगे, वे अंत समय मोक्ष को प्राप्त करेंगे और अकाल पुरूष में अभेद होकर जन्म-मरण से मुक्त हो जायेंगे। गुरू जी वार श्री भगउती जी के अंत में चण्डी देवी की महिमा का वर्णन करते है।

दुरगा पाठ बणाइआ सभै पउड़ीआं।।
फेर न जूनी आइआ जिन इह गाइआ।।

दैत्यों का संहार कर दुर्गा माता का यश चौदह भुवनों में व्याप्त हो गया है। गुरू जी ने दुर्गा माता के यश को 'पउड़ी' छंदों में रचा है। जिस मनुष्य ने दुर्गा मात की अद्वितीय वार का गायन किया है वह फिर जन्म मरण से मुक्त हो गया, भव सागर को पार कर आवागमन के चक्र से मुक्त हो गया।

ज्ञान प्रबोध

श्री गुरू गोबिंद सिँह जी ने ज्ञान प्रबोध के अंत में देवी की महिमा का वर्णन किया है। राजा मुनी ने एक दिन मंत्रिओं और

बुद्धिजीवियों से विचार विमर्श कर यज्ञ करने का प्रस्ताव रखा, मित्र पंडित ने राजा को सुझाव दिया कि जिस प्रकार ब्रह्मा जी की आज्ञानुसार चंडी देवी ने सतयुग में अखंड प्रचंड यज्ञ किया था। उसी विधि विधान से यज्ञ किया जाये। उस यज्ञ के फलस्वरूप देवी को अपार शक्ति प्राप्त हुई थी और उसने महिषासुर, शुंभ, चिच्छर और ब्रिड़ालच्छ आदि दैत्यों को युद्धस्थल में मार कर इंद्र को राज सिंहासन पर विराजमान कराया था।

तैस ही मख़ कीजीअै सुनि राज राज प्रचंड।।
जीति दानव देस के बलवान पुरख अखंड।।
तैस ही मख मारकै सिरि इंद्र छत्र फिराइ।।
जैस सुर सुखु पाइओ तिव संत होहि सहाइ।।

हे राजाओं में बड़े तेज प्रताप वाले चौदह विद्याओं के ज्ञाता, उदार राजा आप सुनिए, आप भी वैसा यज्ञ कीजिए जैसा देवी माता ने सतयुग मे किया था। देश-देशांतरों के दैत्यों जैसे राजाओं को जीतकर अखंड राजा बने हो। जिस प्रकार देवी ने सभी दैत्यों को मार कर इन्द्र के सिर पर स्वर्ग लोक का छत्र धारण कराया था और देवताओं को अभय का सुख प्राप्त कराया था। वैसे ही आप भी यज्ञ करके अत्याचारी शत्रुओं को मारकर संतों की सहायता कीजिए ।

चौबीस अवतार

चौबीस अवतारों के आरम्भ में श्री गुरू गोबिंद सिँह जी उस अकाल पुरुष प्रभु की महिमा का वर्णन करने में अपनी असमर्थता प्रकट करते हैं। एक ही जिह्वा होने के कारण उस प्रभु के पारावार का बखान नहीं किया जा सकता। यह शरीर यदपि करोड़ो जिह्वा भी धारण कर ले, तो भी उस प्रभु के असीम गुणो का गायन नही किया जा सकता। गुरू जी लिखते हैं–

चौपई।।
प्रिथम काल सभ जग को ताता।।

ताते भयो तेज बखयाता।।
सोई भवानी नामु कहायो।।
जिन सिगरी यह स्रिसटि उपाई।।

प्रथम काल में जो सारे विश्व का ताता अर्थात पिता है, उसी से सारे जगत में प्रकाश हुआ। उसी प्रकाश का नाम ही भवानी नाम से विख्यात हुआ और उसी ने ही सारी सृष्टि को उत्पन किया।

कृष्णावतार

श्री गुरू गोबिंद सिंह जी कृष्णावतार का आरंभ देवी माता की स्तुति से करते हैं।

सवैया।।
होइ क्रिपा तुमरी हम पै
तु सभै सगनं गुन ही धरि हौं।।
जीआ धार बिचार तबै बर
बुद्धि महां अगनं गुन को हरि हौं।।
बिन चंड क्रिपा तुमरी कबहूं
मुख ते नहीं अच्छर हउ कर हौं।।
तुमरो कर नामु किधो तुलहा जिम
बाक समुंद्र बिखै तरि हौं।।

दशम पातशाह जी लिखते हैं कि तुम्हारी कृपा होने पर ही वह सर्वगुणों को धारण कर सकेंगे उन्होने अपने चित मे यह विचार धारण कर लिया हैं कि तभी श्रेष्ठ बुद्धि का आविर्भाव होगा जब सब अवगुणों के विचार का नाश होगा। श्री गुरू गोबिंद सिंह जी चंडी माता को संबोधित करके कह रहे हैं कि उनके अनुग्रह बिना वह मुख से एक शब्द का भी उच्चारण नहीं कर सकते। देवी के नाम की तुला बनाकर ही वह कविता रूपी समुद्र से पार हो जायेगें। गुरू जी यहाँ शारदा देवी का गुणगान करते हैं। यह अगणित गुणों को धारण करने वाली शारदा देवी

का स्मरण करने की लालसा रखते हैं, उसकी कृपा से ही कृष्णावतार की रचना संभव हो सकेगी। दुर्गा माता सभी कार्यों को सिद्ध करने वाली, सभी संकटों का निवारण करने वाली है। दुर्गा माता का आदि अंत जानना कठिन है। वह शरणागत का उद्धार कर, पालना करने वाली है। असुरों का संहार कर व पापियों को भी भवसागर से पार करने वाली है। वह मृत्यु फाँस से छुड़ाने वाली है। श्री गुरू गोबिंद सिँह जी लिखते हैं कि दुर्गा माता श्रेष्ठ बुद्धि वाली है, उसकी कृपा द्वारा ही कृष्णावतार की रचना संम्पूर्ण हो सकती है, दुर्गा माता जैसा अन्य कोई गरीबनिवाज़ नही है। जो कोई जिस भावना से दुर्गा माता का जाप करता है, उसे उसी भावनानुसार मनोवांछित फल की प्राप्ति हो जाती है।

जो जप के इह सेव करै
बर को सु लहै मन इच्छत सोऊ।।
लोक बिखै उह की सम तुल
गरीब निवाज न दूसर कोऊ।।

श्री कृष्ण जी की आराधना करने वाली गोपियां भी दुर्गा माता से अपने मनोवांछित वर की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करती हैं। गोपियों ने एकत्रित होकर दुर्गा माता की मिट्टी की सुंदर मूर्ति बनाई। उस मूर्ति को केसर चंदन आदि लगाकर पुष्पवर्षा करके दुर्गा माता को प्रसन्न करने के प्रयत्न किये। देवी माता ने उनकी पुकार सुन ली और अंतर्यामी माता ने आकाशवाणी द्वारा उन्हे मनोवांछित वर प्रदान किये। देवी माता ने कहा—श्री कृष्ण तुम्हारे स्वामी हो जायेंगे। यह सुनकर गोपियों ने दुर्गा माता के चरणों में नमस्कार किया व उनकी स्तुति की। उनके आनंद की कोई सीमा न रही।

श्री गुरू गोबिंद सिँह जी एक बार फिर रास मंडल का वर्णन करने से पहले देवी माता की आराधना करते हैं। देवी माता को अनगिनत नामों व विशेषणों से नमस्कार करते हैं।

उसके अनंत स्वरूपों की व्याख्या करते हैं, और स्वयं को देवी का दास कहकर अपनी रक्षा के लिए विनती करते हैं।

दोहरा।।

दास जान करि दास परि कीजै क्रिपा अपार।।
आप हाथ दै राख मुहि मन क्रम बचन बिचार।।

श्री गुरू गोबिंद सिँह जी विनम्रता से दुर्गा माता से प्रार्थना करते हैं कि मुझे अपना दास जान कर मुझ पर अपार कृपा करो। मन, वचन और विचार से मेरे सिर पर हाथ रख कर मेरी रक्षा करो ।

माता यशोदा, श्री कृष्ण जी, बलराम, गोप, गोपियाँ सभी शहर छोड़ कर देवी माता की पूजा अर्चना करने चल पड़े। गुरू जी देवी की असीम सुदंरता का वर्णन इस प्रकार करते हैं।

आठ भुजा जिह की जग मालम
सुंभ संघारन नाम जिसी को।।
साधन दोखन की हरता
कबि सयाम न मानत त्रास किसी को।।
सात अकास पतालन सातन
फैल रहयो जस नाम इसी को।।
ताही को पूजन दयोस लगयो
सभ गोप चले हित मान तिसी को।।

उस अष्ठ भुजा धारिणी से समस्त विश्व परिचित है। उसका नाम शुंभ संहारन है, जो साधु-संतों के दोषों का नाश करती है। श्याम कवि (गुरू गोबिंद सिँह जी) कहते हैं कि वह भयरहित है और किसी का भय नही मानती है, उसका यश सातो आकाशों और सातो पातालों में व्याप्त है। उसकी पूजा अर्चना का दिन समीप आ गया है उसी की हित साधना में सभी ग्वाले चल पड़े। उन्होंने अपने हाथों में चावल, धूप, घी के दिये आदि सामग्री ले कर देवी माता और शिव जी के सम्मुख रख पूजा की इस से वह इतने आनंदित हुए कि उनके सारे दुखों और

कष्टों का निवारण हो गया वह देवी माता की वंदना करके अति भाग्यशाली बन गये ।

कृष्णावतार में हमें दुर्गा माता के दर्शन पुनः उस वक्त होते हैं जब रुकमणी का विवाह शिशुपाल से होना निश्चित हो गया था। विवाह की सब तैयारियां पूर्ण हो चुकी थी परन्तु रुकमणी मन ही मन श्री कृष्ण जी की मधुर स्मृति में मग्न थी और हर क्षण उनकी प्रतीक्षा में व्यतीत कर रही थी रुकमणी सभी सखियों सहित विवाह पूर्व देवी माता के मंदिर में पूजा करने के लिए गई तो वह दुखी होकर अत्यंत व्याकुल हो गई। उसने रो कर चंडी देवी से प्रार्थना की—क्या मेरे लिए यही वर अपेक्षित था ? सखियों को दूर करके, रुकमणी ने हाथ में छुरी पकड़ ली और विरलाप करते हुए कहने लगी कि मैं आत्मघात कर लूँगी। मैने चंडी माता की बहुत सेवा की है क्या उसका मुझे यही फल प्राप्त हुआ है ? मैं अपने प्राण त्याग दूँगी, मैं इसी मंदिर पर ही हत्या का पाप चढ़ाऊँगी या मैं अभी दुर्गा माता को प्रसन्न करूँगी और श्री कृष्ण जी के वरण का वरदान प्राप्त करूँगी।

देवी जू बाच।।
देख दशा तिह की जग मात
प्रतच्छ हवै् ताहि कहिओ हसि ऐसे।।
सयाम की बाम तै आपणै चित्त
करो दुचिता फुन रंच न कैसे।।
जो सिसपाल के है चित मै
नाहि हवै् है सोऊ तिह की सु रचै से।।
होइ है अवच्छि सोऊ सुंनि री
कबि सयाम कहै तुमरे जीअ जैसे।।

उसकी यह दशा देखकर देवी माता प्रत्यक्ष रूप में प्रकट हो गई और हँस कर उसको कहा—तुम श्री कृष्ण जी की ही पत्नी हो। इस बात के लिये तुम्हारे मन में तनिक भी दुविधा नहीं होनी चाहिए। शिशुपाल के मन में जो बात है, वह पूर्ण नहीं

होगी वह केवल उसके मन का आवेग है, श्याम कवि (श्री गुरू गोबिंद सिँह जी) कहते हैं–दुर्गा माता ने रुकमणी से कहा–हे रुकमणी सुन ! वह अवश्य होगा, जो तुम्हारे चित्त में है।

दुर्गा माता से यह वर प्राप्त करके प्रसन्नता पूर्वक रुकमणी वहाँ से चल पड़ी और रथ पर सवार हो गई परन्तु अपने प्रिय श्री कृष्ण जी की याद को अपने मन में निरंतर संजोये रखा।

पारस नाथ अवतार

श्री गुरू गोबिंद सिँह जी पारस नाथ राजा की कथा का वर्णन करते हुए पारस नाथ द्वारा, अति सुंदर शब्दों में देवी जी की स्तुति की है। पारस नाथ ने देवी माता की स्तुति बड़े सुन्दर शब्दों में मोहनी छंद में की है। दुर्गा माता निश्कलंक, बलशाली, परम ईश्वरीय शक्ति और अति पवित्र है, सम्पूर्ण सृष्टि का भरण करने वाली, पतितों का उद्धार करने वाली और रिद्धियों सिद्धियों की स्वामिनी की जै-जै कार है। देवी माता की स्तुति करते हुए पारसनाथ ने अनेक विशेषणों का प्रयोग किया है जैसे कि चित्रणी, चापणी, चारणी, चच्छणी आदि।

हे चित्रे की सवारी करने वाली ! हे धनुष धारिणी ! हे चारणी नाम से प्रसिद्धि प्राप्त करने वाली ! हे चच्छर दैत्य का संहार करने वाली तेरी महिमा अपरंपार है।

भैरवी भैहरी भूचरा भवानी

हे भैरव शक्ति ! हे भयनाशिनी ! हे सर्वव्यापी ! हे इच्छा पूर्ण करने वाली ! इन शब्दों में पारस नाथ देवी माता की जै जै कार अति सुंदर शब्दावली में करता हुआ कृत-कृत्य हो रहा है। उसने प्रण कर लिया कि जब तक उसे देवी दर्शन नहीं देगी वह अस्त्र-शस्त्र धारण नहीं करेगा।

जाकुह नेत निगम कहि बोलत तासु सु बर जब पाउ।।

और एक दिन अंतर्यामी भवानी ने पारसनाथ के हृदय की व्यथा को जान लिया। उसने अपने भक्त के भक्ति प्रेम को

स्वीकार कर लिया और पारसनाथ को प्रत्यक्ष रूप में दर्शन देकर कृतार्थ किया। माता ने अपने भक्त को वर मांगने के लिए कहा।

देवी बाच।। सारंग।। बिसनपद।। तव्प्रसादि।।
कछु बर मांगहु पूत सयाने।।
भूत भविक्ख नहीं तुमरी सर साध चरत हम जाने।।
जो बर दान चहो सो मांगो सभ हम तुमै दिवार।।
कंचन रतन बज्जर् मुकता फल लीजहि सकल सुधार।।

देवी ने पारस नाथ से कहा—हे मेरे बुद्धिमान पुत्र कुछ वर मांगो, भूत और भविष्य कांल में तेरे जैसा न कोई हुआ है और ना कोई होगा क्यों कि मुझे सभी संतों के चरित्रों का ज्ञान है, जो भी वर चाहो, मांग लो, क्यों कि मैं तत्क्षण ही सब कुछ देने के लिए तैयार हूँ। सोना, जवाहरात, हीरे, मोती के भंडार आदि सब वस्तुएँ ले लो।

पारस नाथ ने अपनी कामनाओं की पूर्ति हेतु माता के चरणों में विनती की—

पारसनाथ बाच।। सारंग।। बिसनुपद।।
सब ही पड़ो बेद बिदिआ बिधि सब ही ससत्र चलाऊ।।
सब ही दोस जेरि करि आपन आपे मता मताऊ।।

हे माता, मेरी आपके चरणों में विनती है कि मैं विधिपूर्वक सारे वेदों और समस्त विद्याओं का पठन कर सकूँ और समस्त शस्त्रों को चला सकूँ। सभी देश देशांतरों को अपने अधीन करके उन पर अपनी इच्छा अनुसार शासन कर सकूँ मुझे ये वरदान दीजिए। दुर्गा माता ने अपने भक्त की प्रार्थना तथास्तु कह कर स्वीकार कर ली और अपने सिँह पर सवार हो कर लोप हो गई। पारसनाथ दुर्गा माता के दिए वरदान को प्राप्त कर धन-धान्य हो गया और अत्यंत सफलता प्राप्त की उसके समक्ष कोई शत्रु न टिक सका।

पख्यान चरित्र

श्री गुरू गोबिंद सिँह जी ने स्त्री और पुरूषों के ४०४ चरित्रों का वर्णन किया है और पहला चरित्र चण्डी माता की स्तुति से आरंभ किया है।

चंडी चरित्र पातशाही १०।।
भुजंग छंद।। तव्प्रसादि।।
तुही खड़गधारा तुही बाढवारी।।
तुही तीर तरवार काती कटारी।।
हल्लबी जुन्नबी मगरबी तुही हैं।।
निहारौ जहां आपु ठाढी वही हैं।।

आप जी चण्डी माता की स्तुति करते हुए लिखते हैं–कि हे भगवती ! तू ही सीधी तलवार की धार है; तू ही तीर तलवार, काती, कटारी है; तू ही श्याम देश के शहर हलब की बनी हलबी तलवार है; दक्षिणी, पश्चिमी देशों की तलवार है; मैं जिस ओर भी देखता हूँ, सर्वत्र तेरे ही दर्शन होते हैं। तू सदैव सब स्थानों पर विराजमान है। इस प्रकार देवी माता के अनंत गुणों के बखान का सिलसिला आरंभ हो जाता है। देवी माता के अनगिनत रूप हैं। चण्डी माता विष्णु, शिव जी, ब्रह्मा और विश्व माता के रूप में विराजमान हैं। देवी माता ने इस संसार में हिन्दू, तुर्क, देव, दानव इत्यादि उत्पन्न किये। देवी माता संसार में विभिन्न धर्म मार्गों के रूप में अवतरित हुई और देवी माता ने ही संसार में उस अकाल पुरूष प्रभु के अनेक नामों की चर्चा और उसकी स्तुति करने वाले लोगों को उत्पन्न किया। देवी ने अपने पवित्र मुखारबिंद से चारो वेदों का उच्चारण किया है।

देवी ने ही नरसिंह का अवतार धारण कर हिरण्यकशिपु को मारा। उसी ने वाराह रूप में दंत पर पृथ्वी के भार को धारण किया था और उसी ने श्री राम चन्द्र और कृष्ण का रूप धारण कर दैत्यों का नाश किया था। वह चौदह लोकों की राजधानी

है और उसके अनगिनत नाम हैं। श्री गुरू गोबिंद सिँह जी इसी आदि शक्ति माता की कृपा दृष्टि एवं अनुकम्पा के लिए विनती करते हैं।

मय्या जान चेरो मया मोहि कीजै।।
चहौं चित्त मै जो वहै मोहि दीजै।।

हे माता मुझे अपना सेवक जान कर मुझ पर कृपा दृष्टि कीजिए और मेरे मन की इच्छाओं की पूर्ति कीजिये। सद्‌गुरू जी चण्डी माता के अनंत तेज व सुंदर स्वरूप का वर्णन करते हैं। देवी माता ने अत्यंत शूरवीर योद्धाओं का संहार किया। गुरू जी लिखते हैं कि ऐसी देवी माता का स्मरण किये बिना भव सागर को पार नहीं किया जा सकता। देवी माता का नाम लेने से असंभव कार्य भी संभव हो जाते हैं।

मूक उचरै शासत्र खट पिंग गिरन चड़ि जाइ।।
अंध लखै बधरो सुनै जो तुम करो सहाइ।।

चण्डी माता के अनुग्रह से मूक प्राणी भी शास्त्रों का उच्चारण करने लगता है। पंगु पर्वतों पर चढ़ सकता है। देवी माता की सहायता से नेत्रहीन देख सकता है और बहरा सुन सकता है।

श्री गुरू गोबिंद सिँह जी चण्डी माता के समक्ष प्रार्थना करते हैं–

प्रथम धयाइ स्री भगवती बरनौ त्रिया प्रसंग।।
मो घट मै तुम हवै् नदी उपजहु बाक तरंग।।

सर्वप्रथम मैं श्री भगवती आदि शक्ति की आराधना करके, स्त्री प्रसंगों का वर्णन कर रहा हूँ। हे देवी माता ! नदी स्वरूप विश्व शक्ति ! कृपा पूर्वक मेरी वाणी रूपी तरंगों में मेरे ह्रदय के अंदर प्रकट हो जाओ।

सद्‌गुरू जी अंतिम चरित्र ४०४ वें में श्री असिध्वज की महिमा का वर्णन करते हैं। जब दैत्य सम्राट और देव सम्राट परस्पर विविध प्रकार से युद्ध करने लगे। भीषण युद्ध हुआ और तब अग्नि की ज्वाला प्रज्वलित हुई, तब उसकी लपटों में से

एक स्त्री पैदा हुई जिसका नाम दुल्हा देवी था। उसी क्रोधाग्नि से उत्पन्न हुई स्त्री ने अपने तन पर अस्त्र-शस्त्र धारण कर लिये व ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगी। उसका रूप-सौंदर्य अनुपम था। उसने चारो दिशाओं में अंर्तघ्यान होकर देखा तो उसे ऐसा कोई पुरूष नहीं दिखाई दे रहा था जिसे वह अपना स्वामी बना ले फिर उसने अपने मन में विचार किया कि वह जगतपति का ही वरण करेगी। उसने अपने मन में यह चिंतन किया कि वह किस तरह के प्रयत्न करे कि अपने लक्ष्य में सफल हो सके। उसने अधिक चैतन्य हो विचार किया और भांति-भांति कें मंत्र लिखे जगत माता भवानी ने प्रसन्न होकर उसको वरदान दिया।

क्रिपा करी जगमात भवानी।।
इह बिध बतिया तांहि बखानी
करि जिनि शोक ह्वदै तै पुत्री।।
निरंकार बरि है तुहि अत्री।।
ताका धयान आजु निसि धरियहु।।
कहिहै जु कछु सोई तुम करियहु।।

जगत माता भवानी अति प्रसन्न हुई और प्रसन्न होकर दुल्हा देवी को वरदान दिया और उसको कहा कि–हे पुत्री, तुम मन में शोक मत करो, निराकार प्रभु ! तुम्हारे साथ विवाह अवश्य करेंगे, तुम्हें अपनी पत्नी बनायेंगे। तुम्हारे लिए ये आवश्यक है कि तुम उनका घ्यान करो और जो वह कहें, उसी तरह करो। जब भवानी ने ऐसा वरदान दिया तो दुल्हा देवी प्रफुल्लित हो उठी। वह अति प्रसन्न व निश्चिंत हो धरती पर सो गई। जब आधी रात व्यतीत हो गई तभी जगत स्वामी की आज्ञा हुई कि जब श्वासवीर्य दैत्य मारा जायेगा, उसके बाद ही वह सुंदरी से विवाह करेंगे। इस तरह दुल्हा देवी युद्ध के मैदान में कूद पड़ी और उसने अत्यंत विकराल युद्ध किये, दुल्हा देवी युद्धों में जूझती रही और अंत में उसने जगत स्वामी की

सहायता से दुष्ट दैत्यों का संहार करके सफलता प्राप्त की। श्री गुरू गोबिंद सिंह जी अंत में लिखते हैं।

क्रिपा करी हम पर जगमाता।।
ग्रंथ करा पूरन सुभ राता।।

इस तरह माता की कृपा सदका सद्‌गुरू जी ने इस ग्रंथ को सम्पूर्ण किया।

उग्रदंती

सद्‌गुरू जी अपनी वाणी उग्रदंती में, जो कि पुरातन बीड़ों में उपलब्ध है, आदि शक्ति माता का वर्णन अति सुंदर शब्दावली में करते हैं। उसमें आदि शक्ति की महिमा का कथन छह छन्दो में अत्यंत प्रभावशाली शैली में वर्णित है। भक्तजन इस वाणी का पाठ करके विस्मादित हो उठते हैं। दुर्गा माता शेर की स्वारी करती है; दुर्गा माता बड़े-बड़े दुष्टों का समूल नाश करती हैं; रिद्धियों सिद्धियों की स्वामिनी है; वेद दुर्गा माता की महिमा का ही गायन करते हैं; बड़े-बड़े ऋषि मुनि व देवते दुर्गा माता का अंत नहीं पा सके। देवी माता सर्वव्यापी है, जल, थल, पर्वत सर्व स्थानों पर विराजमान है। उसका प्रचंड तेज सारे जगत में व्याप्त है। सद्‌गुरू जी की यह तीव्र इच्छा है कि वह देवी माता की कृपा द्वारा हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करें, सभी दुष्टों का अंत हो तथा सारे विश्व में खालसा पंथ का बोल बाला हो। सद्‌गुरू जी पहले छंद के अंत में देवी माता का ध्यान अपनी और आकर्षित करते हुए लिखते हैं।

सुणहु तुम भवानी हमन की पुकारे।।
करहु दास पर मिहर अपरं अपारे।।

हे भवानी माता तुम हमारी पुकार सुनो। तुम अपनी अपार कृपा और अनुग्रह के भंडार हमेशा-हमेशा के लिए अपने दास के लिए खोल दो।

देवी माता दुष्ट दैत्यों का हनन करने वाली है। देवी माता

आदि शक्ति का रूप है, वह जोगमाया है, उसका भेद कोई नहीं पा सकता।

सभै थक रहे मरम किनहूं न पाया।।

देवी माता जल अग्नि व पवन है। वह अत्यंत सुंदर व दैविक आभा वाली है। वही चंद्रमा है, वही सूर्य है। आदि शक्ति सारे संसार की जननी है। देवी माता के अनगिनत रूप हैं। गुरू जी लिखते हैं।

नहीं तुम बिना कोइ रच्छक हमारा
तुही आदि कुआरि देवी अपारा।।

देवी माता के अतिरिक्त कोई भी रक्षक नहीं। वह आदि काल से है और कुंवारी देवी है। वह दयालु है और सब पर कृपा करने वाली है। श्री गुरू गोबिंद सिँह जी लिखते हैं।

करहु मोहि मुकता कटहु भरम जाली।।
नमो दुख हरंती अनंदत सरूपा।।
अपन दास पर मिहर कीजै अनूपा।।

सभी प्रकार के भ्रमों का नाश करके माता मुझे मुक्ति प्रदान करो। हे पाप नाशिनी ! कष्टहरणी, आनंदस्वरूपा, सौदर्य की प्रतिमा देवी माता अपने सेवक पर कृपा व दया करो।

– **तुही देवकी क्रिसन माता कहायं।।**
– **तुही नैणा देवी अलख जग सहायं।।**
– **तुही राधिका रुकमणी तूं कुसल्लिया।।**
– **तुही अंजनी रेनका तूं अहल्लिया।।**

आदि शक्ति भिन्न-भिन्न रूपों में विचर रही है। महान शूरवीर, वीरांगनाएं उस शक्ति से पूर्ण रूप से ओत प्रोत है। कहीं वह कृष्ण जी की माता देवकी के रूप में विराजमान हो रही है, और कहीं नैना देवी के रूप में सारे जगत की सहायता कर रही है, कहीं वह श्री कृष्ण जी की प्रेमिका राधा के रूप में शोभायमान है और कहीं रुकमणी बनकर उन्होंने श्री कृष्ण जी का वरण किया है, माता कौशल्या, रेणुका, अंजनी और अहिल्या

आदि उस अनंत असीम आदि शक्ति के सुंदर स्वरूप हैं।

तुही थंम सिउ निकस नर सिंह होई।।
उदर हरनाखस का नखहु कर परोई।।
तुही कच्छ हुइ दैत मद्ध कीट जारे।।
तुही होइ बैराह हिरनाछय मारे।।
तुही होइ बावन महा छल दिखायो।।
पकड़ राजे बल को पताले पठायो।।
तुही होइ परसराम जग महि प्रकासी।।
सकल छत्रीयन कउ करै छै बिनासी।।
तुही फिर भई राम चंद्रं अपारा।।
पकड़ लंक सउ दैत रावन पछारा।।

वह असीम, अपार शक्ति है, जिसने नरसिंह का रूप धारण करके हिरण्यकशिपु दैत्य को अपने नाखूनों से मारा था। उन्होंने ही मधु कैटभ दैत्य का विनाश किया। उन्होंने ही कच्छ रूप में अवतार धारण किया था। उसी अपरम्पार आदि शक्ति ने वाराह का रूप धारण करके हिरण्यकशिप को मारा था। उन्होंने ही वामन का रूप धारण करके छलपूर्वक बलि को पाताल लोक भेज दिया था। उसी अथाह गहन शक्ति की कृपास्वरूप परशुराम ने सारी सृष्टि से क्षत्रियों का विनाश कर दिया था और श्री राम जी ने रावण जैसे अहंकारी का अंत कर दिया था।

तुही दैत संखासुरै कउ दलंती।।
तुही क्रिसन होइ कंस केसी खपायो।।
तुमन मल्ल चंडूर गहि कर उडायो।।
जगन नाथ हुइ दैत गयासुर बिडारे।।
– तुही दैत किलकासुरे कउ संघरणी।।

आदि शक्ति ने दैत्यों का संहार करने के लिये अवतार धारण किया था जिन्हें देखकर बड़े-बड़े दानव, अत्यंत बलशाली, प्रतापी, शूरवीर योद्धा कांप जाते थे, माता दुर्गा ने सहज ही

उसका मर्दन कर दिया। उनके गर्व अहंकार को चकनाचूर कर दिया। कंस बहुत विकट दुष्ट व अहंकारी था, श्री कृष्ण जी ने उसे क्षणों में मौत के घाट उतार दिया। उसी आदि शक्ति ने शंखासुर मल चंडूर, गयासुर, किलकासुर, शुंभ, महिषासुर आदि का विनाश कर दिया।

– **तुही बिआस गोरख अगसतं कबीरै।।**
– **तुही रिखि बसिसटे तुही है द्रुबासा।।**
तुही जमदगनि संत गोतम प्रकासा।।

वह अनंत, असीम, अपार आदि शक्ति ऋषियों मुनियों, जोगियों, संतों के स्वरूप में विचरण करती है। ऋषि व्यास, गोरख, अगस्त्य, कबीर, वशिष्ट, जमदग्नि आदि महापुरूष उस आदि शक्ति से सराबोर थे।

तुही सभ जगत कउ उपावै छकावै।।
तुही बहुड़ आपे छिनिक मउ खपावै।।

आदि शक्ति मनुष्य की हर प्रकार की इच्छा की पूर्ति कल्प वृक्ष की भांति करती है। वह लक्ष्मी और पार्वती स्वरूपा है और उसका प्रमुख कार्य है कि वह देवी माता सारे विश्व की सृजनहार और सृष्टिकर्ता है। सारे संसार को पैदा करके उसकी प्रतिपालना करती है और क्षणमात्र में उनका विनाश कर देती है क्योंकि वह अकाल पुरूष की आदि शक्ति है। उसकी रचना का रहस्य कोई नहीं जान सकता। गुरू जी इस प्रकार की माता की चरणरज प्राप्त करने के लिये लालायित हैं।

करहु मिहर आपुनी चरन धूरि पावउं।।
तुमन द्वार पर सीस आपणा घसावउं।।

देवी माता अनगिणत दैत्यों का नाश करती है, सभी युगों में अवतार धारण करती है। आदि शक्ति अकाल पुरूष की अति निकटवर्ती है। सद्गुरू जी लिखते हैं।

सुणहु दास की बेनती हरि भवानी।।
दइआ धार मुहि लाज राखहु निदानी।।

हे माता ! तुम अपने दास की प्रार्थना सुनो, दया भाव धारिणी हे माता ! अपने दास की प्रतिष्ठा की सदैव रक्षा करो।

आदि शक्ति प्रकृति की चारों श्रेणियों अंडज, जेरज, सेतज, उतभुज सभी में विद्यमान है। वह अति बलिशाली है और सबके ह्रदयों में निवास करती है। वह अदभुत विलक्षण स्वरूपा है। उसने प्रकृति के भिन्न-भिन्न रूपों को धारण किया है। उसका पारावार कोई नहीं पा सकता। इस प्रकार की माता की चरणरज प्राप्त करने से सदा उद्धार होता है। जगत माता सभी की मनोकामनाएँ पूर्ण करती है। वह अकाल पुरूष के नाम का जाप करने वाली इश्वरीय शक्ति है तथा वह स्वयं उसमें निहित है। वह पतितों का नाश कर, सारे जगत को भय मुक्त करने वाली है। उस देवी का स्मरण करते ही सभी दुखों की निवृति हो जाती है। सद्‌गुरू जी पुनरावृति करते हैं कि देवी माता की कृपा से गऊ गरीब के कष्टों का अंत हो सकता है। सम्पूर्ण जगत भिखारी है और माता अन्नपूर्णा है, वह सब जीवों का पोषण व प्रतिपालना करती है। देवी माता सम्पूर्ण विश्व को सुखमयी बनाती है।

सद्‌गुरू जी के लिए भारत में हो रहे गोवध को सहन करना बिल्कुल असहनीय था। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए उन्होंने लिखा है–

– गऊ घात का दोख जग सिउं मिटाऊं।।
– यही आस पूरन करहु तुम हमारी।।
मिटै कसट गऊअन छुटै खेद भारी।।
– यही बेनती खास हमरी सुणीजै।।
असुर मार कर रच्छ गऊअन करीजै।।

सद्‌गुरू जी गोवध केवल भारत में ही नही अपितु समस्त विश्व में बंद करना चाहते है। इस मंतव की पूर्ति हेतु वह दुर्गा माता के चरणों में विनती करते हैं कि गो माता पर हो रहे

अत्याचारों का सर्वदा अंत हो जाये और विश्व भर में गोघात करने वाले असुरों का विनाश हो जाये ताकि वह हमेशा के लिये सुरक्षित हो जायें।

– करहु हुकम अपना सभै दुसट घाऊं।।
तुरक हिंद का सकल झगरा मिटाऊं।।
– हमन बैरीअन कउ पकड़ घात कीजै।।
तबै दास गोबिंद का मन पतीजै।।
– अपुन जान कर मोहि लीजै बचाई।।
असुर पापीअन मार देवहु उडाई।।
– करहु हरि भवानी जगत की संभारे।।
हमन दुसट दोखी सभन होहिं छारे।।
– सदा सरब दा चरण तुमरे धिआऊं।।
तुमन मिहर सिउं दुसट सगले खपाऊं।।

सद्गुरू जी की ये इच्छा थी कि सभी दुष्टों का इस पृथ्वी से अंत हो जाये। हर स्थान पर साधू संतों का और धर्म का निवास हो। उनकी कामना थी कि दुष्टों का कोई अंश तक इस संसार मे न रहे और सारे जगत में धर्म ही व्याप्त हो। दुष्टों और शत्रुओं का नाश हो जाये और द्वेषों का अंत हो जाये। तुर्कों और हिन्दुओं के परस्पर सभी वैर विरोध समाप्त हों तथा सम्पूर्ण जगत सुख व चैन की सांस ले सके। इन लक्ष्यों की पूर्ति हेतु जगत माता अति सहायक हो सकती है। इसलिए श्री गुरू गोबिंद सिंह जी विनती करते हैं–

– फतहि डंक बाजै क्रिपा यो करीजै।।
यही बारता दास की नित सुणीजै।।
– नही तुम बिना कोइ रच्छक हमारा।।
– नमो दुख हरंती अनंदत सरूपा।।
– यही दान मांगउ करहु जै हमारी।।
सभै दुसट देता खपै छिन मझारी।।

इन दुष्टों, पापियों व शत्रुओं का संहार कर के सारे जगत

में सुख का वातावरण बने। सभी भूले-भटके लोग धर्म के मार्ग पर चल कर सदा सुख व आनंद की प्राप्ति कर सकें चारो ओर धर्म की जय-जय कार हो। ये सब देवी माता की कृपा से ही संभव है, क्योंकि वह माता सदा अपने सेवकों, भक्तों की रक्षा के लिए प्रणवत है तथा उन्हें सदैव विजयी बनाती है।

– धरम की धुजा कउ जगत मै झुलारहु।।
– सकल जगत कउ सुख बसावहु अनंदा।।
तुही दरद मेटन स्त्री हरि मुकंदा।।
– फतह सतिगुरू की जगत सिउं बुलाऊं।।
सभन कउ सबद वाहि वाहि द्रिड़ाऊं।।

भगवती माता की कृपा द्वारा ही इस संसार में विजय पताका व धर्मध्वजा फहराई जाती है। सभी ओर आनंद, खुशियों और उल्लास का उन्माद छा जाता है। आप जी सम्पूर्ण जगत को उस अकाल पुरूष प्रभु के नाम का जांप व स्मरण करते हुए देखना चाहते हैं और इस की प्राप्ति जगत माता की अपार कृपा द्वारा ही हो सकती है।

श्री गुरू गोबिंद सिँह जी उग्रदंती के पाठ का महात्म्य वर्णित करते है–

दुख रोग सोग भै मिटै कलेसा।।
बहु सुख उपजे अनंद प्रवेसा।।

उग्रदंती का पाठ करने से साधक के दुख, रोग-सोग, भय, कलेषों का अंत हो जाता है। उसको असंख्य सुखों की प्राप्ति हो जाती है और वह सदा प्रसन्नचित रहता है।

अगम खेल तुमरा कहा को बखानै।।
तुहीं भेद अपना अपनु आप जानै।।
सगल ढूंढ थाके लखियो किछ न भेदा।।
– नही भाख साकउ महिमा तुहारी।।
लखयो नाहि किनहूं तुमन अंत पारी।।
– कहां लौ बखानौं तुमन गति अपारै।।

– **सभै पच मुए पार पावत न कोई।।**

इस प्रकार एक बात पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाती है कि श्री दशम-ग्रंथ साहिब में श्री गुरू गोबिंद सिँह जी ने आदि शक्ति दुर्गा माता को अनगिनत, असंख्य नामों व विशेषणों से सम्बोधित करके, उसकी महिमा का गुणगान बड़ी सुंदर एवं रोचक शैली में किया है परन्तु आप एक बात पर पुनः जोर देते है कि वह उस अनंत, असीम, अपार, आदि अनादि अखंड शक्ति की महिमा का वर्णन शब्दों में करने में असमर्थ हैं।

मैं आपणा सुत तोहि निवाजा।।
पंथ प्रचुर करिबै को साजा।।

उस महान आदिशक्ति का रहस्य जानना अत्यंत कठिन है। श्री गुरू गोबिंद सिँह जी उस अकाल पुरूष प्रभु के वत्स है, जिस प्रकार बचित्र नाटक में अकाल पुरूष वाच में स्पष्ट हो जाता है।

सरब काल है पिता अपारा।।
देबि कालका मात हमारा।।

सद्‌गुरू जी अकाल पुरूष के वचनों पर पुष्प अर्पण करते हैं और सरब काल को अपना पिता कह कर उनकी उपासना करते हैं और देवी माता को अपनी पूज्य बरदायिनी माता कह कर सम्मानित करते हैं, जैसा कि बचित्र नाटक की उपरोक्त पंक्तियों से स्पष्ट हो जाता है।

– **क्रिपा सिंध तुमरी क्रिपा जौ कछु मो पहि होइ।।**
रचो चंडका की कथा बाणी सुभ सभ जोइ।।
– **बिनु चंड क्रिपा तुमरी**
कबहूं मुख ते नहीं अच्छर हउ कर हौं।।
– **निहारो जहां आपु ठाढी वही है।।**
– **मय्या जान चेरो मया मोहि कीजै।।**
– **प्रथम धियाइ स्त्री भगवती बरनौ त्रिया प्रसंग।।**

इस प्रकार असीम श्रद्धा और अध्यात्मिकता से गुरू जी

अकाल पुरूष और आदि शक्ति की अराधना करते हैं, श्री दशम ग्रंथ में संकलित रचनाएं इस प्रकार की पुष्टि करती हैं कि गुरू गोबिंद सिँह जी वाणी के आरंभ में लिखते हैं कि पूज्य देवी माता की अपार कृपा के बिना उनके ग्रंथ सम्पूर्ण नहीं हो सकते। इसी लिए उनके समक्ष कृपा व दया हेतु वह बारम्बार विनती करते हैं।

इस प्रकार के अक्षय उदाहरण श्री दशम ग्रंथ साहिब में संकलित है। आदि शक्ति का कोई आदि अंत नही। वह सर्वत्र, सभी कालों मे विराजमान रही है। वह भूत वर्तमान-भविष्य में भी सर्वदा विचरण करती रही है व करती रहेगी।

आदि शक्ति अनादि है

आदि शक्ति का अस्तित्व आदि काल से ही है। उसकी असीम, अपार, अगाध गति का कोई अंत नहीं है। इस कथन की पुष्टि दशम ग्रंथ में संकलित निम्नाकिंत उदाहरणों से स्पष्ट हो जाती है–

दुसट निकंदणि आदि ब्रिते।।

इस आदि शक्ति का स्वभाव आदि काल से ही दुष्टों को समूल नष्ट करने, असुरों का नाश करने व दुर्जनों के दलों को दंडित करने का है।

आदि कुमार अगाध ब्रिते।।

वह आदि कुमारी है तथा अगाध वृति वाली है।

आदि अनादि अगाध अछे।।

वह आदि काल से ही आदि-अनादि, अगाध एवं अक्षय है।

आदि अनील अगाध अभे।।

वह अगिणत, आदि रहित, अगाध और अभय शक्ति है।

आदि अनादि अगाध उरं।।

भक्तों ने उसे आदि काल से अनादि एवं अगाध जानकर अपने ह्रदयों मे बसाया हुआ है।

आदि जुगादि अगाधि गते।।

वह युगों-युगांतरों से अगाध रूप से गतिशील है।

आदि अनादि अगाधि ब्रितै।।

आदि शक्ति आदि अनादि से ही अगाध वृति वाली है।

आदि जुगादि अनादि मते।।

आदि शक्ति सब का मूल है, वह युगों-युगांतरों का आरंभ है। उसके आदि का कोई थाह नहीं है।

आदि अनील अगाध कथे।।

आदि शक्ति समग्र विश्व का आदि रूप है, अनंत है और अगाध कथा वाली है।

उपरोक्त उदाहरणों से ये स्पष्ट हो जाता है कि आदि शक्ति का कोई आरंभ नहीं, उसका अस्तित्व आदि काल से ही है, उसकी महिमा अगम, अगाध व अक्षय है और उसका कोई अंत नही पा सकता।

वह सर्वव्यापी है

आदि शक्ति सर्व व्यापक है, वह जल, थल, पर्वत, अकाश, पाताल, खंडों व ब्रहमंडों सभी में परिवेष्टित है।

तुही जल थले परबते गिरि निवासी।।

तू ही जल में, थल में, पर्वतों और गिरि (पहाड़ों) में निवास करती है।

तुही अलख बरणी तुही भू आकासी।।

तेरा रूप अदृश्य है। पृथ्वी और आकाश भी तू ही है।

तिहू लोक नवखंड में तुम प्रधानी।।

तीनो लोक और नौ खंडों में तू ही प्रधान है।

तुही जग सकल महि रमंती अनूपं।।

तू ही सारे विश्व में रम रही है, जिसकी उपमा नहीं की जा सकती।

तुही खंड ब्रहमंड भूमं सरूपी।।

तू ही पृथ्वी के खंडो और ब्रहमंडों का प्रकाश स्वरूप है।

तुही सुरग पाताल बैकुंठ धरणी।।

तुम ही स्वर्ग, पाताल, वैकुण्ठ और पृथ्वी हो।

तुही सरब ठौरन रही आप छाए।।

तू ही समस्त स्थानों पर विराजमान है।

तुमन भवन त्रै लोक पुर महि बिराजै।।

तीनो लोक तेरे भवन हैं जहाँ तू विराजमान है।

नमो सरब बिआपी।।

नमस्कार है तेरे सर्वव्यापक स्वरूप को।

इस तरह आदि शक्ति जगत माता अंतर्भूत है, चौदह भुवन, खंड-नवखंड, तीनों लोक उसके प्रचण्ड तेज एव आभा से सुसज्जित हो रहे हैं।

निरंजन पुरूष की शक्ति

दुर्गा माता निराकार प्रभु की आदि शक्ति है, उसे अपने प्रभु प्यारे का अथाह प्रेम एवं असीम स्नेह प्राप्त है। वह सर्वदा उस प्रभु प्रियतम के चरणों में ध्यानस्थ होकर आनंदमग्न रहती है। इस के अतिरिक्त आदि शक्ति अपने प्रियतम के चरणों में नतमस्तक होकर हर्षित एवं पुलकित होती है। वह निरंजन स्वरुपा एवं उसकी आदिरानी है। यद्यपि यह कहा जाये कि वह निरंजन प्रभु की सबसे बड़ी उपासिका है तो यह कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। वह परम भक्त है, वह नित्य प्रति अपने प्यारे अकाल पुरुष प्रभु की आज्ञा मे रहकर उसके आदेश का पालन करती है। वह दुर्गा माता, अकाल पुरूष की ज्योतिस्वरूपा है और उस प्रभु की शक्ति स्वरूपा है। आदि शक्ति उस अकाल पुरूष प्रभु के सबसे निकटवर्तियों में से है इस लिए वह प्रभु के प्रमुख भक्तों, प्यारों व दुलारों की पंक्ति में अग्रणीय व वंदनीय है। आप जी सुंदर शब्दों में आदि शक्ति दुर्गा माता और अकाल पुरूष के संबंधों के बारे में इस प्रकार वर्णन करते हैं–

– तुही काल अकाल की जोति छाजै।।
– तुही भगत करतार की सकति राणी।।
तुही हरि सिमर कर भई जोग धयाणी।।
– तुही रूप नराइणी हरि सरीरे।।
– तुही निस दिना जाप हरि हरि जपंती।।
– निरंजन पुरख शाहु शाहन अपारे।।
– तुही सकति हवै् निकट वरती मुरारै।।
– तुही अलख करतारणी शिव सरूपा।।
– तुही खास भगतन हरे हरि जपंती।।
तुही हरि चरण पर अपुन सिर धरंती।।
– तुही हरि क्रिपा सिउ अगम रूप होई।।
– निरंजन सरूपा तुही आदि राणी।।
– तुही हरि निरंकार ठाकुर जपंती।।

भवानी माता हरि जी के सुंदर स्वरूप पर न्यौछावर होती जाती है और हर प्रकार से कुर्बान होने के लिए लालायित है।

तूं हरि हरे हरि हरे हरि भवानी।।
निरंजन पुरख पर भई तूं कुरबानी।।

इस प्रकार हरि अलक्ख इश्वरी, हरि भवानी, निरंजन परम पुरूष के दरबार में इस जगत को चलाने हेतु एक महत्व पूर्ण भूमिका निभा रही है। उस अगम, अगाध शक्ति का स्थान सर्वोच्च है। वह प्रभु की सलाहकार होकर सभी कार्य बड़ी कुशलता पूर्वक करती है।

– तुही निज वजीरण प्रभू दर सुहंती।।
– निरंजन पुरख कउ सदा तू धिआवै।।
– प्रभू द्वार ठाढी वजीरन कहावै।।

अपने निरंजन मुरारे की शक्ति बनकर आदि शक्ति प्रकृति के रूप मे उसके निकट सुशोभित हो रही है। दुर्गा भवानी उस अकाल पुरूष प्रभु की प्राकृतिक शक्ति होकर विचर रही है।

– निरंजन प्रभू नाथ कादर मुरारे।।

तहां तूं खड़ी कुदरती रूप धारे।।
– धरन पवन आकाश कुदरति सरूपा।।
तुही कुदरती अलख देवी अनूपा।।

इस प्रकार दुर्गा माता लौकिक शक्ति के रूप में धरती, पवन और आकाश मे विचर रही है।

भगवती शक्ति के अनंत नाम

श्री गुरू गोबिंद सिँह जी ने देवी माता के विभिन्न रूपों का निरूपण अत्यंत सुंदर शब्दावली में किया है और इस कथन को पूर्ण कर दिया है कि एक ही भगवती शक्ति के अनंत नाम है। श्री दशम ग्रंथ में ४०४ चरित्रों का वर्णन करते हुए पहले पख्यान चरित्र में चंडी की महिमा का वर्णन इस तरह करते हैं।

– तुही जोग माया तुही बाकबानी।।
तुही आपु रूपा तुही स्त्री भवानी।।
– जयंती तुही मंगला रूप काली।।
कपालनि तुही है तुही भद्रकाली।।
द्रुगा तूं छिमा तूं शिवा रूप तोरो।।
तुधात्री सव्हा नमसकार मोरो।।
– नमो कालका रूप जव्ाला जयंती।।
– नमो अंबका जंबहा जोति रूपा।।
– नमो हिंगुला पिंगुलायं अनूपा।।
– परी पदमनी पारबती परम रूपा।।
सिवी बासवी ब्राहमी रिद्ध कूपा।।
– जया अजया चरमणी चावडायं।।
– नमो अंबका तोतला स्त्री भवानी।।
– नमो चंड मुंडी म्रिड़ा क्रूर काला।।
– नमो अंबका जंबहा कारतिकयानी।।

इस प्रकार दशम ग्रंथ में आदि शक्ति भगवती माता के अनंत नामों में से कुछेक नाम निम्नांकित हैं–अम्बिका, तोतला,

शीतला, भवानी, कालका, जालपा, महाजोग माया, ईश्वरी जम्बहा, भैरवी, भुवनेश्वरी, काली, जया, अजया, हिंगुला, पिंगुला, शिवा, जच्छनी, किंकरणी, राजेश्वरी, ब्राहमी, वैष्णवी, कार्तिकयानी, जयंती, धात्री, मंगला, रूपा, उदारा, भद्रकाली साकुंभरी, केसरी, दुर्गा, श्री भवानी, विश्वमाता, देवी माता, बरमनी, अंजनी, भवी कंकाली, अत्रि, चित्रा, सवित्री, मानवी, आनंदी, गिरजा, रूद्र, म्रिड़ा, कनिका, परमेश्वरी, गायत्री, भीमा, चण्डी, रमा, रसटरी, कुमारी, भावनी, परी, पद्मिनी, पार्वती, शिवी, बासवी, श्री, नारायणी, चंद्रणी, भाणवी, अनंती, पारब्रहमी, मुकंदी, चंद्रचूडं, अर्धचंद्रायिणी, गुरी, गऊरज़ा, गुपाली, ज्वाली, पिलंगी, पवंगी, विधाता, जटी, शारदा, सरस्वती, मानसा, तेजवंती, अनंती आदि।

सुंदरता

आदि शक्ति अत्यंत सुंदर है। जब चतुर्भुजी-अष्ठभुजी दुर्गा भवानी अस्त्रों शस्त्रों से सुसज्जित हो जाती है, उसके स्वरूप का वर्णन करना असंभव हो जाता है। उस मनमोहक छवि को निहारना मुशकिल हो जाता है। जगत माता की अपार सुंदरता, उसके भक्तों, प्यारों को तो मनमोहक लगती ही है, असुर भी उस चुम्बकीय देवत्व की सुंदरता की तरफ चुम्बक की भांति खिंचे चले आते हैं और देवी जी की अपार सुंदरता का आनंद लेने के लिए ललायित हो जाते है। भगवती देवी के नूर का पासार समस्त विश्व में हो रहा है। देवी माता का व्यक्तित्व सब से विलक्ष्ण है और वह सारे जगत में अद्वितीय है।

तुही है सभन बीच सभ सौ निराली।।

उसका अनुपम रूप बिल्कुल अलग व निराला है। भगवती माता जब अपने आठ हाथों में शस्त्र धारण करती है तब उसकी सुंदरता का वर्णन नहीं किया जा सकता। श्री गुरू गोबिंद सिंह जी चण्डी चरित्र प्रथम में लिखते हैं।

।।दोहरा।।

घंटा गदा त्रिसूल अस संख सरासन बान।।
चक्र बक्र कर मै लीए जन ग्रीखम रितु भान।।

दुर्गा माता जब दैत्यों से युद्ध करने रणभूमि में आई, तब उसके अष्ट हाथों में धंटा, गदा, त्रिशूल, तलवार, शंख, धनुषबाण और भयंकर चक्र थे, उसने आठ शस्त्र धारण किये हुए हैं और उसका तेज इस प्रकार प्रतीत हो रहा है जैसे ग्रीष्म ऋतु में सूर्य प्रचंड तेज वाला हो जाता है। देवतागन दैत्यों से पराजित होकर, सुरपुरी छोड़कर दुर्गा माता की शरण में चले गये। भवानी माता ने उनकी पुकार सुनकर, प्रत्यक्ष प्रकट होकर दानवों को मारने का वचन दिया। उस समय अस्त्र शस्त्र धारण कर देवी माता सुंदर प्रतीत होती है; गुरू जी उनके रूप का वर्णन इस प्रकार करते हैं–

कंचन से तन खंजन से
द्रिग कंजन की सुखमा सकुची है।।

दुर्गा माता का तन, सोने के समान और आंखें खंजन पक्षी के समान है। जिनकी सुंदरता के समक्ष कमल के फूलों की सुषमा भी सकुचा रही है।

लै करतार सुधा कर मै
मध मूरत सी अंग अंग रची है।।

देवी का अंग-प्रत्यंग इस प्रकार प्रतीत हो रहा है कि मानो विधाता ने अपनी अंजलि में अमृत लेकर, उस अमृत की भव्य मूर्ति तैयार करके उसके अंग-अंग की रचना की हो।

आनन की सर को सस नाहिन
अउर कछू उपमा न बची है।।

दुर्गा माता के सुंदर मुख की तुलना चंद्रमा भी नहीं कर सकते तथा अन्य कोई उपमा भी उपयुक्त नहीं लगती।

इस प्रकार दुर्गा माता सुमेरू पर्वत की चोटी पर बैठी हुई थी उसकी अपार सुंदरता को निहार कर, शुंभ, अपने भाई

निशुंभ के पास जाकर, चंडी देवी की मनमोहक सुंदरता का वर्णन करके उसे लुभायमान करने लगा। शुंभ ने अपने भ्राता निशुंभ को चण्डी देवी की सुंदरता का वर्णन करने के लिए कहा। निशुंभ ने देवी माता की सुंदरता का वर्णन इन शब्दो में किया–

सवै्या।।
हरि सो मुख है हरिती दुख है।।
अलिकै हरिहार प्रभा हरनी है।।

उसका मुख चन्द्रमा के समान है वह सब दुखों को निवृत करने वाली है और केशराशि शिव के गले में पड़े साँपों के हार के समान है बल्कि सर्पों की शोभा को भी मात करने वाली है।

लोचन है हरि से सरसे।।
हरि से भरुटे हरि सी बरुनी है।।

दुर्गा माता के चक्षु कमल के फूलों के समान है तथा उसकी भौंहें शिव धनुष के आकार की हैं तथा बरौनियां तीरों की भाँति हैं।

केहरि सौ करिहा चलबो
हरि पै हरि की हरिनी तरनी है।।

उसकी कमर सिँह के समान पतली है तथा चाल मस्त हाथी जैसी है। वह तरुणी हर एक के मन को मोह लेने वाली है। वह कामदेव की पत्नी रति की शोभा को नमस्कार करने वाली है।

है कर मै हरि पै हरि सो
हरि रूप कीए हरि की धरनी है।।

दुर्गा देवी के हाथ में तलवार है तथा वह सिँह की सवारी करने वाली है, उसका रूप सूर्य जैसा प्रचंड तेज युक्त है। वह सुंदर स्वरूप वाली शिव जी की अर्धांगिनी दुर्गा है ।

।।कबितु।। मीन मुरझाने कंज खंजन खिजाने
अलि फिरत दिवाने बन डोलै जित तित ही।।

हे राजन, चंचल वह इतनी है कि मछली भी उसकी चंचलता को देखकर लज्जित हो जाती हैं; नेत्रों की कोमलता देखकर कमल और सुंदरता देखकर खंजन भी लज्जित हो उठते हैं। भ्रमर उसकी भौहों को देखकर दीवाने हो रहे हैं तथा वन में इधर उधर डोल रहे हैं।

कीर अउ कपोत बिंब कोकिला कलापी बन
लूटे फूटे फिरै मन चैन हूं न कितही।।

नासिका को देखकर, तोते, गर्दन को देखकर कबूतर, आवाज़ को सुनकर कोयल और होठों को देखकर कंदूरी, अपने मन का चैन खोकर लुटे-लुटे से जंगलों में धूमते हैं।

दारम दरक गइओ पेख दसननि पांत
रूप ही की क्रांत जग फैल रही सित ही।।

दांतों की पंक्तियों को देखकर अनार के दाने लज्जित हो रहे हैं। उसके रूप की सुंदरता सारे संसार में चांदनी बनकर फैल रही है। उसके रूप की कांति से सारा जगत प्रकाशित हो रहा है।

ऐसी गुन सागर उजागर सु नागर है।।
लीनो मन मेरो हरि नैन कोर चित ही।।

वह ऐसे गुणों की सागर एवं सौंदर्यशालिनी है कि उसने अपनी चितवन से मेरा मन मोह लिया है।

इस तरह अत्यंत सुंदर देवी को प्राप्त करने के लिए शुंभ लालायित हो उठा और उसे प्राप्त करने के प्रयत्न आरंभ कर दिये।

भगवती माता हर रूप में अत्यंत सुंदर और मनमोहक है। जब वह काली का भयानक रूप धारण करती है, तो प्रचंड ज्वाला जैसी बन जाती है। उस समय वह अत्यंत रमणीक एवं मनमोहक लगती है। जब दुर्गा देवी मुंड की माला अपने गले में धारण करती है, उसके लाल-लाल नेत्रों से प्रचंड ज्वाला निकलती है; उस दृश्य की महिमा भी अपरम्पार है। श्री गुरू गोबिंद सिंह

जी लिखते हैं–

मुंड की माल दिसान के अंबर
बाम करयो गल मैं असि भारो।।
लोचन लाल कराल दिपै दोऊ
भाल बिराजत है अनियारो।।
छूटे है बाल महा बिकराल
बिसाल लसै रद पंति उजयारो।।
छाटत जव्ाल लए कर बयाल
सुकाल सदा प्रतिपाल तिहारो।।

देवी माता के शीश पर मुंड की माला, दसों दिशाओं के वस्त्र और भारी तलवार तन पर शोभायमान है। उसके भयानक लाल नेत्र, मस्तक पर प्रकाशमान हो कर शोभायमान हो रहे हैं। देवी माता की विशाल केशराशि खुली हुई लहरा रही है और दांतों में से अग्नि निकल रही है उसके हाथ रूपी सर्प अग्नि छोड़ रहे हैं। अकाल पुरुष स्वयं उसकी रक्षा करता है। गुरु जी ने भगवती माता की सुंदरता अपार विशेषणों से की है जिनमे से कुछेक इस प्रकार हैं–

अपार सुंदरता चित्र रूपं, परम रूपा, आदि रूपा कुमारी, परी पद्मिनी, पार्वती, रमा, रसटरी, काम रूपा, कुमारी, भवी, भावनी, रिसटणी, पुसटणी, तारणीयं, तोखणी, पोखणी, चंद्रणी, भाणवीयं, गोबिंदी, छैल रूपा, चारू नैणा, कामरूपा, कमच्छिया, करोटी, चर्तुबाही, अष्टबाहा, सिता, अनंति, जयंती, अनंदी, अर्ध चंद्रायिणी, चुड़ं, ससं सेखरी, चंद्रभाला, पवित्री, पुराणी, परेयं, अरूपं, अनूपं, गुरी, पिलंगी, पवंगी, चरचतंगी।

देवी माता का कालका रूप अपार मनमोहक है। कुछेक विशेषण इस रूप का वर्णन इस प्रकार करते हैं–

कालका रूप, क्रूरकर्मा, सत्रहंती, भीमरूपा, कालकायं, रूपरानी, कालरात्रि, क्रूरकाली, गंजनी, सोखणी, रूप काली, घोर रूपा, बक्र बैणा, म्रिड़ा, क्रूर काली, म्रिड़ाली, असिता, कालकायं,

दीर्धदाड़ा, सियाम बरनी, दाड़ गाडं, भूतराटी, कली कारनी, सत्र चरबायिणी, भूत हंता, भडिंगी, कालका, कालरूपी, क्रिपाणी, स्त्रोण बीरजारदनी, धूम्र हंती, चंड मुंडारदनी, चामरं चीरणी, ब्रिड़ालाच्छ हंती।

इस प्रकार श्री गुरू गोबिंद सिँह जी ने आदि शक्ति दुर्गा माता की अपार सुंदरता का वर्णन् किया है। वह हर रूप में मनमोहक और अति सुन्दर है।

इच्छा पूरक

दशम ग्रंथ में संकलित रचनाओं में से एक बात पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाती है, जब-जब भी किसी ने दुर्गा माता की जिस-जिस रूप में वंदना की, जिस रूप में भी कामना की पूर्ति के लिए देवी माता के चरणों में प्रार्थना की, उसकी सभी भावनाओं एवं मनोकामनाओं की पूर्ति उसी तरह हुई। इंद्र आदि देवताओं ने अपनी स्वर्गपुरी पुनः प्राप्त करने के लिए चंडी देवी की विधि पूर्वक आराधना व वंदना अर्चना की। देवी माता ने उनकी पुकार सुन दैत्यों से युद्ध कर उनको यमपुरी पहुंचाया और इंद्र अभिषेक कर उसे सुरपुरी का राज्य वापस दिलाया व उसके सिर पर छत्र धारण करवाया।

गोपियों ने अपने मन भावन श्री कृष्ण जी को वर के रूप में प्राप्त करने के लिए देवी माता की पूजा की और माता ने उनकी इच्छाओं की पूर्ति उनको प्रत्यक्ष रूप में दर्शन देकर की। सारे गोप, गोपियां माता यशोदा, नंद बाबा आदि ने अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए देवी माता की आराधना की। अत्यंत दुख के क्षणों मे रुकमणी ने देवी माता की आराधना की, माता ने प्रकट हो कर उसकी, श्री कृष्ण जी को वर रूप में प्राप्त करने की विनती सुनी; देवी माता ने साक्षात रूप में दर्शन देकर रुकमणी को धन्य कर दिया। राजा पारसनाथ ने भी माता का स्तुति गायन किया व उसे देवी माता के दर्शनों का सौभाग्य

प्राप्त हुआ और माता ने उसे उसकी कामनाओं की पूर्ति का वर देकर उसे कृत-कृत्य कर दिया। इस प्रकार माता अपने प्रिय भक्तों को दर्शन देकर उनके दुखद पलों में उनकी सदैव ही सहायक होती रही है।

हर देवता का अपना वाहन है, इस प्रकार दुर्गा माता का वाहन सिँह है। श्री गुरू गोबिंद सिँह जी देवी को केहरी वाहनी, सिँह वाही आदि विशेषणों से संबोधित करते हैं। चण्डी चरित्र में दुर्गा देवी के सिँह का वर्णन अत्यंत सुंदर उपमाओं से किया गया है।

सिंघ चंड बाहन भइओ सत्रन कउ दुखु दीन।।

देवी माता का वाहन सिँह

चण्डी देवी का वाहन सिँह बन गया है और सिँह शत्रुओं का हनन करने वाला है।

सवै्या।। दारुन दीरघु दिगज से बल
सिंघहि के बल सिंघ धरे है।।

दुर्गा माता के सिँह का भयानक रूप दिगज के समान है और वह सिंघहि के समान बलशाली है।

रोम मनो सर कालहि के जन पाहन पीत मै ब्रिछ हरे है।।

दुर्गा के शेर के शरीर पर जो रोम हैं वह मानो काल के वाण हों और शरीर पर जो काली धारियां हैं वह ऐसी प्रतीत हो रही हैं जैसे पीले पत्थरों पर काले वृक्ष उगे हों।

मेर के मद्धि मनो जमना लर केतकी पुंज पै भ्रिंग ढरे है।।

शेर की पीठ की लकीर ऐसी लग रही है मानो सुमेरू पर्वत से यमुना की धारा की लकीर हो। शरीर पर काले बाल कहीं -कहीं ऐसे दिखाई दे रहे हैं, मानो केतकी के फूलों पर भ्रमरों के झुंड मंडराते हों।

मानो महा प्रिथू लै के कमान
सु भूधर भूम ते निआरे करे है।।

दुर्गा माता के सिंह के शरीर पर जो गोल धब्बे हैं वह ऐसे दिखाई देते हैं मानो राजा पृथू ने धनुष उठाकर धरती से पर्वतों को पृथक कर दिया हो।

इस दुर्गा देवी के सिंह ने अति भयानक युद्धों में पूर्ण रूप से सहयोग़ दिया, कई बार शत्रुओं ने वाणों से उसे धायल भी किया किंतु उसने वीरतापूर्वक शत्रुओं का विरोध किया व कईयों का संहार कर दिया।

इस प्रकार आदि शक्ति भगवती माता ने असंख्य रूप धारण करके असुरों, पापियों, शत्रुओं, दुष्टों का नाश करके पृथ्वी पर विचर रहे जीवों का उद्धार किया। अपने सेवकों, भक्तों प्रियजनों के जीवन में आनंद, सुख, शांति प्रदान की। श्री गुरू गोबिंद सिंह जी ने देवी माता के कौतुक व करिशमों को दशम ग्रंथ में संकलित रचनाओं में रचकर सम्पूर्ण मानवता का कल्याण किया। उन्होंने स्वयं देवी माता का वात्सल्य, आनंद, स्नेह, प्यार का जी भर के रसास्वादन किया व सम्पूर्ण मानवता को भी उनके स्नेह व गहरे रंगो मे रंग दिया। नेत्र उनके गहरे प्यार में सजल हो उठे। वे सब करवद्ध हो कर उनके चरणों में नतमस्तक हो गये तथा गुरू जी के शब्दों का उच्चारण होने लगा–

सबै संत उबारी बरं बयूह दाता।।
नमो तारणी कारणी लोक माता।।
नमसतयं नमसतयं नमसतयं भवानी।।
मदा राख लै मो क्रिपा कै क्रिपानी।।
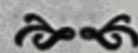
देवी जू की उसतत

अथ जैकार सबद कथनं।।
बेली बिद्रम छंद।।

जै सबद देव पुकारहीं।।
सब फूल फूलन डारहीं।।
घनसार कुंकम लिआइ कै।।
टीका दीयो हरखाइ कै।।१।।२२०।।

शब्दार्थ : फूलन–हर्षित होकर। घनसार–काफूर। हरखाइ कै–प्रसन्न होकर।

भावार्थ : जब कालका देवी ने सुम्भ दैत्य को मृत्यु दंड दिया, तब चारो दिशाओं में खुशी की लहर दौड़ गई; देवी की स्तुति में सुर जै जै कार शब्द का धोष करने लगे। इस ध्वनि से सारा पर्यावरण गूंज उठा। वे हर्षित होकर चारो ओर फूलों की वर्षा करने लगे। उन्होने काफूर व कुमकुम लाकर प्रसन्नता पूर्वक देवी के मस्तिष्क पर विजय का टीका लगाया।

When the Goddess Kali killed the demon Sumbh, there were merry makings and rejoicings all around. The deities started making shouts of victory in praise of Goddess kali and the atmosphere became vibrant. Everyone was over joyed and showered flowers to celebrate the victory. They brought camphor, saffron and gladly applied on the forehead of the Goddess Kali.

चौपई।।

उसतत सबहूं करी अपारा।।
ब्रहम कवच को जाप उचारा।।
संत संबूह प्रफुल्लत भए।।
दुसट अरिसट नास हुऐ गए।।२।।

शब्दार्थ : ब्रहम कवच को जाप–देवी की वह स्तुति जो ब्रह्मा ने मधु कैटभ राक्षसों से भयभीत होकर सहायता के लिये प्रार्थना करते हुये की। प्रफुल्लत–प्रसन्न। अरिसट–महांशत्रु।
भावार्थ : सभी देवताओं ने इकत्र होकर देवी की बहुत सराहना की ओर ब्रह्म कवच का जाप किया (यह ब्रह्म कवच वराह पुराण और दुर्गा पाठ के प्रारंम्भ मे लिखा हुआ है) समस्त साधू संत अति प्रसन्न हुये। क्योंकि उनकी भक्ति में बाघा डालकर कष्ट देने वाले महां दुष्ट दैत्यों का नाश हो गया था।

All the deities sang high eulogies and recited the same prayer which Brahma had made to the Goddess to seek her protection against the demons Madhu and Kaitabh. All the saints felt greatly pleased because all the wicked and inimical who were creating hindrances in their worship had been annihilated.

साधन को सुख बढे अनेका।।
दानव दुसट न बाचा एका।।
संत सहाइ सदा जग माई।।
जह तह साधन होइ सहाई।।३।।

शब्दार्थ : साधन–साधू संत। दानव–दैत्य, राक्षस। जग–माई, जगत माता (दुर्गा)।

भावार्थ : साधू संतों के सुखों में अनेक प्रकार की वृद्धि हुई, क्योंकि उनको कष्ट देने वाले दुष्ट दैत्यों में से कोई एक भी जीवित नहीं रहा। जगत माता दुर्गा साधू संतों को हर प्रकार की सहायता प्रदान करती है एवं सर्वत्र उनकी सहायक सिद्ध होती है।

The welfare and the amenities of the saints increased tremendously because not a single wicked troublesome demon survived. The mother Goddess is ever helpful to the saints. She has always rescued the saints under dire circumstances.

जू की उसतत।।
भुजंग प्रयात छंद।।
नमो जोग ज्वालं धरीअं जुआलं।।
नमो सुंभ हंती नमो क्रूर कालं।।
नमो स्रोण बीरजारदनी धूम्र हंती।।
नमो कालका रूप ज्वाला जयंती।।४।।

शब्दार्थ : ज्वालं–अग्नि। धरीयं–धारन करने वाली। हंती–नाश करने वाली। जयंती–विजयी।

भावार्थ : उस योग अग्नि और उस अग्नि को धारण करने वाली देवी दुर्गा को मेरा नमस्कार है। सुंभ दैत्य का नाश करने वाली और भयानक काल रूपिणी देवी को मेरा नमस्कार है। रक्तबीज और घूम्रनयन जैसे भयानक दैत्यों का संहार करने वाली महान शक्ति को मेरा नमस्कार है। मेरा बारम्बार नमस्कार है दुर्गा माता के कालका रूप, ज्वाला रूप और विजयी रूप को।

Salutation to the flame of yoga, the Goddess Kali who is embodiment of effulgence. Salutation to the killer of Sumbh and Goddess Kali the dreadful killer. Salutation to the killer of Rakatbij and annihilator of Dhumarlochan. Salutation to Kalika, the effulgent form and the ever victorious

नमो अंबका जंबहा जोति रूपा।।
नमो चंड मुंडादरनी भूपि भूपा।।
नमो चामरं चीरणी चित्त्र रूपं।।
नमो परम प्रगया बिराजै अनूपं।।५।।

शब्दार्थ : अंबका–जननी (माता)। जंबहा–जंभ्भ असुर को मारने वाली। मुंडारदनी–चंड और मुंड दैत्यों को मारने वाली,। भूपा–राजाओं की मलिका (महारानी)। चामरं चीरणी–चामर असुर को चीरने वाली,। चित्त्र रूपं–अति सुंदर रूप वाली। प्रग्या–विद्धास्वरूप।

भावार्थ : हे जननी, जंभ्भ राक्षस को मारने वाली, ज्योति स्वरूपा आपको मेरा नमस्कार है। चंड और मुंड दैत्यों का नाश करने वाली राजाओं की मलिका महारानी दुर्गा को नमस्कार है। चामर दैत्य को चीरने वाली और अति सुंदर स्वरूप वाली को मेरा प्रणाम है। उत्तम बुद्धि वाली विद्या स्वरूप देवी जो कि इस जगत में अनुपम रूप में विराज रही है के चरणों में सादर प्रणाम है।

Salutation to the revered mother, the luminous countenance, the vanquisher of demon Jambh. Salutation to the killer of Chand and Mund, the empress of the emporers Goddess Durga. Salutation to Goddess Durga the beauteous one who tore the demon Chamar to pieces. Salutation to the superb scholar Goddess Durga, the unparalleled charming one.

नमो परम रूपा नमो क्रूर करमा।।
नमो राजसा सातका परम बरमा।।
नमो महिख दईत कौ अंत करणी।।
नमो तोखणी सोखणी सरब इरणी।।६।।

शब्दार्थ : क्रूर करमा–भयानक करम। बरमा–परम लोह कवच धारण करने वाली। तोखणी–तृप्त करने वाली। सोखणी–नाश करने वाली। इरणी–प्रेरित करने वाली।

भावार्थ : अति सुंदर स्वरूप वाली दुर्गा को नमस्कार है और भयानक कर्म करने वाली को नमस्कार है। रज, सत्व आदि गुणों को धारण करने वाली और परम लोह कवच बनकर सुरक्षा प्रदान करने वाली देवी को नमस्कार है। महिषासुर का अंत करने वाली को मेरा नमस्कार है। सारे संतों भक्तों को संतोष प्रदान करने वाली, अपने प्रिय भक्त जनों के दुखों का निवारण करने वाली और सब को शुभ कर्मों की ओर प्रेरित करने वाली देवी को नमस्कार है।

Salutation to the most beautiful Durga the performer of the terrible deeds. Salutation to the embodiment of instinct of passion, the element of purity who protects her devotees by becoming their supreme armour. Salutation to the annihilator of Mahikhasur. Salutation to Goddess Durga who grants patience to the saints and her beloved ones, annihilator of their misfortunes, and inspirator of all for noble deeds.

बिड़ा लच्छ हंती क्रूराछ घाया।।
दिजगि दयार दनीअं नमो जोग माया।।
नमो भईरवी भारगवीअं भवानी।।
नमो जोग ज्वालंधरी सरब मानी।।७।।

शब्दार्थ : घाया–नाश कर दिया। दिजगि दयार दनीअं–ब्रह्मा पर दया करके पसीजने वाली। जोग माया–श्री कृष्ण जी के बदले में आई कन्या जिसे कंस ने मारने का प्रयत्न किया और वह विद्युत रूप होकर नभ में ओझल हो गई।

भावार्थ : बिडालाक्ष दैत्य का हनन करने वाली, करु राक्षस का नाश करने वाली, ब्रह्मा पर दया करके पसीजने वाली देवी को नमस्कार है और नमस्कार है तेरे उस जोग माया स्वरूप को जिसको कंस ने मारने का प्रयत्न किया परन्तु वह विद्युत रूप होकर नभ में ओझल हो गई। नमस्कार है भयभीत करने वाली भैरवी, भृगु वंश से संबंध रखने वाली भारगवी और माता भवानी नाम को। जोग अग्नि को धारण करने वाली और सबके द्वारा मान्य शक्ति दुर्गा माता को नमस्कार है।

Salutation to the killer of the Biralach and annihilator of demon Karurach. Salutation to yoga Maya who was merciful to Brahma. Salutation to the terrifying power of Shiva, the close associate of Bhrigu and the mother Bhavani. Salutation to the flame of yoga and embodiment of effulgence who is acknowledged by all.

अधी उरधवी आप रूपा अपारी।।
रमा रसटरी काम रूपा कुमारी।।
भवी भावनी भईरवी भीम रूपा।।
नमो हिंगुला पिंगुलायं अनूपा।।८।।

शब्दार्थ : अधी–पाताल वासी शक्ति। उरधवी–आकाशवासी शक्ति। रूपा–जिसके तुल्य कोई ना हो। रमा–अति सुन्दर। रसटरी–राज्य करने वाली। काम रूपा–अति सुन्दर। हिंगुला–मकरान (सिंघ) देश में पूज्य। पिंगुलायं–देवी का एक उपनाम।

भावार्थ : हे माता तुम पाताल और आकाश में पूर्ण रूप होकर विराज रही हो। तुम अपार स्वरूप वाली हो जिसकी तुलना में और कोई नहीं। तुम अत्यंत सुन्दर और राज्य करने वाली रानी हो, तुम काम रूप देश मे पूज्य कामख्या देवी और अति सुन्दर स्वरूप वाली कुमारी हो। तुम मन को मोह लेने वाली सुन्दरी हो और भयभीत करने वाली भैरवी व भीम रूप भी तुम्हारा ही है। तुम मकरान (सिंध) देश मे पूज्य, हिंगुला भी हो और पिंगुला भी तुम्हारा ही रूप है। तुम अनुपम हो। तेरे ऐसे समस्त स्वरूपों को मेरा शत्-शत् प्रणाम है।

Thou art all pervasive in the abyss and the sky. Thou art the unparalleled beauty, charming, powerful ruler, the Goddess Kamakhya worshipped in Kamrup, beautiful virgin, fascinating, attractive and the most fierceful power of Lord Shiva. Salutation to the most worshipped image of Hingla in Sindh and Pingla the illustrious one.

नमो जुद्धनी क्रुद्धनी क्रूर करमा।।
महां बुद्धनी सिद्धनी सुध करमा।।
परी पदमनी पारबती परम रूपा।।
सिवी बावसी ब्रहमी रिद्ध कूपा।।६।।

शब्दार्थ : जुद्धनी–युद्ध करने वाली। क्रुद्धनी–क्रोध करने वाली। बुद्धनी–बुद्धिमान। सिद्धिनी–सिद्धियों वाली। परी–अप्सरा। सिवी–शिव की शक्ति। बासवी–इंद्र की शक्ति। ब्रहमी–ब्रह्मा की शक्ति। रिद्ध कूपा–रिद्धियों के ना समाप्त होने वाले खजाने।
भावार्थ : नमस्कार है युद्ध करने वाली और भयानक करम करने वाली को। नमस्कार है श्रेष्ठ बुद्धिवाली, सिद्धियों वाली और शुभ करम करने वाली को। कोहकाफ की अप्सरा, पद्मिनी, पार्वती तेरे ही अत्यंत सुन्दर रूप हैं। तुम ही शिव, इंद्र और ब्रह्मा की शक्ति का स्रोत हो और तुम ही रिद्धियों का कभी ना समाप्त होने वाला खजाना हो।

Salutation to Goddess the great warrior who in furious mood performs terrible deeds in battlefield. Thou art the supreme genius, a great miraculous spiritual power and the performer of noble deeds. Thou art the most beautiful and attractive fairy like Padmini and Parvati. Thou art the source of Power of Shiva, Indra, Brahma and an unlimited treasure of super-natural powers.

ग्रिड़ा मारजनी सूरतवी मोह करता।।
परा पउसटणी पारबती दुसट हरता।।
नमो हिंगुला पिंगुला तोतलायं।।
नमो कारतिकयानी सिवा सीतलायं।।१०।।

शब्दार्थ : ग्रिड़ा–रुद्र की शक्ति। मारजनी–अवगुणों को दूर करके शुद्ध करने वाली। सूरतवी–कृपा करने वाली दया रूपा। परा–ब्रह्म विद्या की दाती। पउसटणी–पुष्टी करने वाली। तोतलायं–बच्चों की भांति तोतले बोल बोलने वाली कालिका देवी। कारतिकयानी–शिव के पुत्र कार्तिकेय की शक्ति। सिवा–कल्याणकारी। सीतलायं–सीतला देवी का रूप धारण करने वाली।

भावार्थ : ग्रिड़ नामक रुद्र की शक्ति, अवगुणों को दूर करके शुद्ध करने वाली, कृपा करने वाली और मोह करने वाली देवी को नमस्कार है। ब्रह्म विद्या की दाती सब को पुष्टी करने वाली, पार्वती रूप और दुष्टों का हनन करने वाली को नमस्कार है। मकरान देश (सिंध) में पूज्य हिंगुला, पिंगुला और बच्चों की भांति तोतले बोल बोलने वाली को नमस्कार है। शिव के पुत्र कार्तिकेय का पोषण करने वाली शक्ति और कल्याणकारी सीतला माता को शत् शत् प्रणाम है।

Thou art the Power of Shiva, the remover of flaws. Salutation to the compassionate and affectionate Goddess. Thou art the originator and supporter of the divine knowledge of Brahma, the Parvati and the vanquisher of the wicked. Salutation to the most worshipped lisperer Durga who is worshipped as the Hingla and Pingla. Salutation to the power of Kartikeya the son of Shiva and the image of Sitala.

भवी भारगवीअं नमो ससत्र पाणं।।
नमो असत्र धरता नमो तेज माणं।।
जया आजया चरमणी चावडायं।।
क्रिपा कालकायं नयं नीति निआयं।।११।।

शब्दार्थ : भवी–यम की शक्ति। भारगवीयं–भृगु की शक्ति। जया–विजय प्राप्त करने वाली। आजया–जिसे कोई भी जीत नहीं सकता। चरमणी–ढाल धारण करने वाली। चावडायं–चमुंडा (चंड और मुंड दैत्य को मारने वाली)। क्रिपा–कृपा स्वरूपिणी। नयं–नई नवेली। नीति–सदा। निआयं–न्याय स्वरूप।

भावार्थ : यम की शक्ति, भृगु की शक्ति और हाथों में शस्त्र धारण करने वाली देवी माता को नमस्कार है। सब पर विजय प्राप्त करने वाली और सदैव अजेय रहने वाली, सुन्दर ढाल धारण करने वाली, चंड और मुंड दैत्यों का हनन करने वाली, कृपा स्वरुपिणी, कालिका रूप, सदैव नवीन रहने वाली नित्य न्याय स्वरूप माता को शत्-शत् प्रणाम है।

Salutation to the power of Yamaha and Bhrigu, the mother Goddess who holds weapons in her hands. Salutation to the wearer of arms who is full of grandeur. Thou art the ever victorious, undefeatable, holder of the shield and annihilator of Chand and Mund. Thou art the gracious incarnate, ever new and ever just.

नमो चापणी चरमणी खड़गपाणं।।
गदा पाणिणी चक्रणी चित्त्र माणं।।
नमो सूलणी सैहथी पाणि माता।।
नमो गिआन बिगिआन की गिआन गिआता।।१२।।

शब्दार्थ : चापणी–धनुष धारण करने वाली। गदा पाणिणी–हाथ में गदा धारण करने वाली। चक्रणी–चक्र धारण करने वाली। सूलणी–त्रिशूल धारण करने वाली। सैहथी पाणि–हाथ मे बरछी धारण करने वाली। बिगिआन–ज्ञान, साईंस, पदार्थक ज्ञान। गिआन–जानकारी। गिआता–जानने वाली।

भावार्थ : हाथ में धनुष, ढाल एवं तलवार धारण करने वाली देवी माता को नमस्कार है। हाथ में गदा, चक्र धारण करने वाली चित्र स्वरुपिणी को नमस्कार है। हाथ में त्रिशूल व बरछी ग्रहण करने वाली माता को नमस्कार है। हर प्रकार के इल्म की ज्ञाता, हर प्रकार के पदार्थों के ज्ञान की सूझ बूझ रखने वाली देवी माता को नमस्कार है।

Salutation to the mother Goddess, the holder of bow, sword and shield in her hands. Thou art the beauteous one, holder of mace and chakra. Salutation to the mother Goddess who holds trident and pike in her hands. Salutation to mother Goddess who has thorough knowledge of everything in cosmos.

नमो पोखणी सोखणीअं म्रिड़ाली।।
नमो दुसट दोखारदनी रूप काली।।
नमो जोग जुआला नमो कारतिकयानी।।
नमो अंबका तोतला स्त्री भवानी।।१३।।

शब्दार्थ : म्रिड़ाली–शिव की स्त्री, पार्वती, दुर्गा। दुसट–दुरजन, पापी। दोखारदनी–दुखदाई शत्रूओं और कुक्रमों को नष्ट करने वाली।

भावार्थ : अपने प्रियजनों का पोषण करने वाली और उनके दुखों का नाश करने वाली काली स्वरूप कालिका को नमस्कार है। जोग अग्नि को धारण करने वाली देवी को नमस्कार है और नमस्कार है शिव के सुपुत्र कार्तिकेय का पोषण करने वाली शक्ति को। हे माता तुम्हारे अम्बिका, तोतला एवं श्री भवानी स्वरूपों को नमस्कार है।

Salutation to the power of Lord Shiva who is nourisher of her disciples and annihilator of their agonies. Salutation to the black complexioned Kalika the killer of the wicked and the wickedness. Salutation to the flame of yoga and the power of Kartkeya, the son of Lord Shiva. Salutation to mother Ambika, the lisperer and Sri Bhavani.

नमो दोख दाही नमो दुखय हरता।।
नमो ससत्रणी असत्रणी करम करता।।
नमो रिसटणी पुसटणी परम जुआला।।
नमो तारुणीयं नमो ब्रिध बाला।।१४।।

शब्दार्थ : दोखदाही–दोषों को जलाने वाली। दुखय हरता–दुखों का हरन करने वाली। तारुणीअं–तरुण अवस्था वाली। ब्रिध –वृद्ध अवस्था वाली स्त्री। बाला–बाल रूप।

भावार्थ : दोषों और पापों का दहन करने वाली को नमस्कार है और दुखों का हरन करने वाली दुर्गा माता को नमस्कार है। नमस्कार है शस्त्रों और अस्त्रों से सुसज्जित होकर युद्ध करम करने वाली को। नमस्कार है हृष्ट पुष्ट करने वाली और महांतेज स्वरूप वाली देवी को। तेरे तरुण अवस्था वाले युवतिस्वरूप को नमस्कार है। नमस्कार है तेरे बाल एवं वृद्ध स्वरूप को।

Salutation to the power of the Almighty who chars the sins and annihilates all the agonies. Salutation to the wearer of worldly and divine weapons and fighter in the field. Salutation to the healthy, stout and the supreme flame. Salutation to the adolescent, the old and the young form of the Goddess.

नमो सिंघ बाही नमो दाढ़ गाढ़ं।।
नमो खग्ग दग्गं झमाझम बाढ़ं।।
नमो रूढ़ गूढ़ं नमो सरब बिआपी।।
नमो नित्त नारायणी दुसट खापी।।१५।।

शब्दार्थ : सिंघ बाही–सिंह की सवारी करने वाली। दाढ़ गाढ़ं–भीष्ण दाड़ों वाली। खग्ग दग्गं–चम चमाती हुई तलवार। बाढ़ं–लगातार काट कर फैंकने वाली। रूढ़ गूढं–गहरे अर्थों वाले पारम्परिक नाम (भवानी, भगउती और चंडी आदि)। नारायणी–विष्णु की शक्ति। दुसट खापी–दुष्टों का विनाश करने वाली।

भावार्थ : सिंह की सवारी करने वाली दुर्गा माता को नमस्कार है नमस्कार है उस भीषण दाड़ों वाली को। नमस्कार है चमचमाती हुई तलवार स्वरूप शक्ति को जिसकी चमकती हुई तीक्षण धार निरन्तर शत्रुओं को काटकर फैंक रही है। तेरे गहरे भावों वाले सुन्दर पारम्परिक नामों (भवानी, भगउती, चंडी आदि) को नमस्कार है। नमस्कार है तेरे सर्वव्यापक स्वरूप को। तेरे विष्णु जी की सदैव शक्ति स्वरूप को नमस्कार है, जो दुष्टों का विनाश करती है।

Salutation to the rider of lion and possessor of horrible teeth. Salutation to your power of shining sword which kills the wicked swiftly. Salutation to your conventional names (Bhagwati, Bhawani, Chandi etc.) and salutation to the all pervasive. Salutation to the eternal one, the power of Lord Vishnu, the killer of the wicked.

नमो रिद्धि रूपं नमो सिद्ध करणी।।
नमो पोखणी सोखणी सरब भरणी।।
नमो आरजनी मारजनी काल रात्री।।
नमो जोग ज्वालंधरी सरब दात्री।।१६।।

शब्दार्थ : रिद्धि–सफलता, उन्नति। आरजनी–चाँदी जैसे उज्जवल स्वरूप वाले। मारजनी–दोषों पापों से मुक्त करने वाली। काल रात्री–महाँ प्रलय का समय। दात्री–दात देने वाली।

भावार्थ : नमस्कार है तुम्हारे सफलता प्रदान करने वाले स्वरूप को और नमस्कार है तेरे सिद्धियाँ देने वाले स्वरूप को। अपने प्रियजनों और सबका पालन पोषण करने वाली, उनके दुःखों का विनाश करने वाली और सबके खजाने भरपूर करने वाली को नमस्कार है। नमस्कार है चाँदी जैसे उज्जवल स्वरूप वाली को, दोषों पापों से मुक्ति करने वाली को महाप्रलय जैसी काली रात्रि जैसे भयानक स्वरूप को। जोग अग्नि धारण करने वाली और सर्वदाती को नमस्कार है।

Salutation to the personifire of supernatural power and performer of spiritual deeds. Salutation to the nourisher and provider of her disciples, the destroyer of their agonies and the fulfiller of the desires of all. Salutation to the silver bodied, the purifier of all the sins and the very image of doom's day. Salutation to the embodiment of the flame of yoga and the benefactor of all.

नमो परम परमेस्वरी धरम करणी।।
नमो नित्त नाराइणी दुसट दरणी।।
छला आछला ईसुरी जोग जुआली।।
नमो बरमणी चरमणी क्रूर काली।।१७।।

शब्दार्थ : दुसट दरणी–दुष्टों का नाश करने वाली। छला–छलने वाली। आछला–किसी से ना छली जाने वाली। ईसुरी–माया संयुक्त इश्वरी शक्ति। बरमणी–लोह कवच स्वरूपा। चरमणी–ढाल धारण करने वाली।

भावार्थ : नमस्कार है परम परमेश्वरी एवं धर्म कर्म करने वाली देवी माता को जो सदैव नवीन है और दुष्टों का हनन करने वाली है। वह सब को छलने वाली, किसी से ना छली जाने वाली, माया युक्त इश्वरी शक्ति और जोग अग्नि को धारण करने वाली है। नमस्कार है तुम्हारे लौह कवच धारण करने वाले, ढाल धारण करने वाले भयानक कालिका रूप को।

Salutation to the supreme Goddess, the performer of religious tenet. Salutation to the ever eternal Goddess, the destroyer of scoundrels. Thou art the illusory of all. None can play artifice upon you the supreme Goddess, the effulgence of flame. Salutation to the protector and the shield of the saintly disciples and performer of terrible deeds.

नमो रेचका पूरका प्रात संधिआ।।
जिनै मोह कै चउदहूं लोक बंधिआ।।
नमो अंजनी गंजनी सरब असत्रा।।
नमो धारणी बारणी सरब ससत्रा।।१८।।

शब्दार्थ : रेचका–रिक्त करने वाली। पूरका–पूर्ण करने वाली। प्रात–सुबह। संधिया–सायकाल। बंधिआ–बंधा हुआ। अंजनी–माया स्वरूप। बारणी–बरसाले वाली।

भावार्थ : नमस्कार है तेरे श्वास, निश्वास एवं प्रातःसंध्या के स्वरूप को जिसने अपनी माया से चौदह भुवनों को बांध रखा है। नमस्कार है तेरे माया स्वरूप, सबका गर्व चूर करने वाले और सर्व अस्त्रों से सुसज्जित स्वरूप को। नमस्कार है तेरे सब प्रकार के शस्त्र धारण करके उनको बरसाने वाले स्वरूप को।

Salutation to the source of inhalation and exhalation of breath in human beings and the image of morning and evening, who has bound all the fourteen realms in the web of infatuation. Salutation to the illusionary power of the Goddess, the destroyer of the pride of wicked and the wearer of all the divine weapons. Salutation to wearer and user of all the weapons.

नमो अंजनी गंजनी दुसट गरबा।।
नमो तोखनी पोखनी संत सरबा।।
नमो सकतणी सूलणी खड़ग पाणी।।
नमो तारणी कारणीअं क्रिपाणी।।१६।।

शब्दार्थ : अंजनी–माया स्वरूप। गंजनी–तोड़ने वाली। दुसट गरबा–दुष्टो का गर्व चूर करने वाली। सूलणी–त्रिशूल धारण करने वाली। क्रिपाणी–कृपा करने वाली।

भावार्थ : नमस्कार है उस माया स्वरूप शक्ति को जो सभी दुष्टों के गर्व को चूर करती है। नमस्कार है अपने सभी संतों भक्तो को संतुष्ट करके पालण पोषण करने वाली देवी माता को। नमस्कार है हाथ में त्रिशूल एवं खड़ग धारण करने वाली देवी को। अपने प्रियजनो को पार लगाने वाली, सब कारणों की करता एवं कृपा करने वाली शक्ति माता को नमस्कार है।

Salutation to the illusionary power of the Goddess, the destroyer of the pride of all the scoundrels. Salutation to the Goddess who grants patience to all saints and nourishes them. Salutation to the all powerful Goddess, the holder of trident and sword. Salutation to the mother Goddess who grants remission of the sins to all, accomplishes all the tasks and the granter of benevolence.

नमो रूप काली कपाली अनंदी।।
नमो चंद्रणी भानवीअं गुबिंदी।।
नमो छैल रूपा नमो दुसट दरणी।।
नमो कारणी तारणी स्त्रिसटि भरणी।।२०।।

शब्दार्थ : कपाली–खप्पर रखने वाली दुर्गा। अनंदी–अनंद स्वरूपा। चंद्रणी–चंद्रमा की शक्ति। भानुवीअं–सूर्य की शक्ति। गुबिंदी–गोबिंद की शक्ति। छैल रूपा–सुन्दर स्वरूप वाली युवति।
भावार्थ : नमस्कार है काले स्वरूप वाली, हाथ में खप्पर रखने वाली अनंद स्वरूप देवी माता को। नमस्कार है चंद्रमा की शक्ति, सूर्य की शक्ति और गोबिंद की शक्ति कालिका माता को। नमस्कार है तेरे अति सुन्दर युवति स्वरूप को एवं नमस्कार है तेरे दुष्टों के दलने वाले स्वरूप को। नमस्कार है सृष्टि की रचना करने वाली, तारने वाली एवं पोषण करने वाली देवी को।

Salutation to Kali the black complexioned, the epithet of Lord Shiva and ever blissful. Salutation to the power of the Moon, the Sun and Lord Vishnu. Salutation to the beauteous one and destroyer of the wicked. Salutation to the accomplisher of all tasks, granter of remission of all sins and full filler of the requirements of the universe.

नमो हरखणी बरखणी ससत्र धारा।।
नमो तारणी कारणीअं अपारा।।
नमो जोगणी भोगणी प्रम प्रगिआ।।
नमो देव दईतिआइणी देवि दुरगिआ।।२१।।

शब्दार्थ : हरखणी–प्रसन्न होने वाली। बरखणी–(शस्तों की वर्षा) बरसाने वाली। प्रगिआ–महां विद्या स्वरूप। दईतिआइणी –देवों और दैत्यों की स्त्रियाँ हो कर विचरने वाली। देवि दुरगिआ–जिसको जान सकना कठिन हो।

भावार्थ : नमस्कार है प्रसन्न होकर शस्त्रों की वर्षा करने वाली देवी माता को। नमस्कार है सबको तारने वाली व अनेक कार्य करने वाली माता को। नमस्कार है तेरे जोग स्वरूप, सभी प्रकार के पदार्थ देने वाने भोग रूप को और महां विदुषी स्वरूप को। नमस्कार है तेरे देवों और दैत्यों की स्त्री होकर विचरने वाले देवी स्वरूप को जिसको जान सकना कठिन है।

Salutation to the blissful Goddess who showers stream of weapons. Salutation to the granter of remission of all sins, accomplisher of limitless tasks. Salutation to the embodiment of Yoga, cherisher of worldly pleasures and the supreme knowledge. Salutation to the unknowable who manifests as consort of both Gods and demons.

नमो घोर रूपा नमो चार नैणा।।
नमो सूलणी सैथणी बक्क्र बैणा।।
नमो ब्रिधि बुद्धं करी जोग जुआला।।
नमो चंड मुंडी म्रिड़ा क्रूर काला।।२२।।

शब्दार्थ : घोरि रूपा–घने काले स्वरूप वाली कालिका। चार नैणा–सुन्दर नयनों वाली। बक्क्र बैणा–कटु वचन बोलने वाली। ब्रिधि बुद्धं–बुद्धि को विकसित करने वाली। चंड मुंडी–चंड और मुंड राक्षसों को मारने वाली।

भावार्थ : नमस्कार है घने काले स्वरूप वाली कालिका देवी को; नमस्कार है सुन्दर नेत्रों वाली देवी को। नमस्कार है त्रिशूल व बरछी धारण करने वाली और कटु वचन बोलने वाली देवी माता को। नमस्कार है बुद्धि को विकसित करने वाली और जोग अग्नि स्वरूप को। नमस्कार है चंड और मुंड राक्षसों को मारने वाली म्रिड़ नामक रुद्र की शक्ति को जो कि भयानक काले स्वरूप वाली है।

Salutation to the horrible black complexioned Kalika and salutation to her beautiful eyes. Salutation to the sharp utterances of mother Goddess, the wearer of the trident and the spear. Salutation to the effulgence of flame who enhances the knowledge. Salutation to the killer of Chand and Mund, the power of Lord Shiva having dreadful black complexion.

नमो दुसट पुसटारदनी छेम करणी।।
नमो दाढ़ गाड़ा धरी दुखय हरणी।।
नमो सासत्र बेता नमो ससत्र गामी।।
नमो जच्छ बिदिआ धरी पूरन कामी।।२३।।

शब्दार्थ : दुसट पुसटारदनी–शक्तिशाली दुष्टों को नष्ट करने वाली। छेम करणी–क्षमा करने वाली। सासत्र बेता–शास्त्रों को जानने वाली। ससत्र गामी–शस्त्र चलाने मे निपुण।

भावार्थ : नमस्कार है शक्तिशाली दुष्टों को नष्ट करने वाली को और क्षमा प्रदान करने वाली देवी को। नमस्कार है कराल दाढों वाली और दुःखों का निवारन करने वाली देवी माता को। नमस्कार है सभी शास्त्रों की ज्ञाता को और नमस्कार है उस देवी को जो शस्त्रों को चलाने में निपुण है। नमस्कार है जच्छ विद्या में निपुण देवी को जो सभी प्रकार की कामनाओं को पूर्ण करती है।

Salutation to the annihilator of the strong demons and the great forgiver. Salutation to her who killed demons with strong jaws and removed sorrows of saints. Salutation to the possesser of superb knowledge of scriptures and an expert in the use of weapons. Salutation to her who has divine knowledge of Yaksh - a demi God and fulfills all desires.

रिपं तापणी जापणी सरब लोगा।।
थपे थापणी खापणी सरब सोगा।।
नमो लंकुड़ेसी नमो सकति पाणी।।
नमो कालका खड़ग पाणी क्रिपाणी।।२४।।

शब्दार्थ : रिपं तापणी–शत्रुओं को अग्नि की भांति तपाने वाली। जापणी–सब लोगो द्वारा जपने योग्य। लंकुड़ेसी–हनुमान की स्वामिनी। सकति पाणी–हाथ में बरछी धारण करने वाली।

भावार्थ : शत्रुओं को अग्नि की भांति तपाने वाली जो सभी लोगों द्वारा जपने योग्य है। तुम स्थित जगत की स्थापना करने वाली हो एवं हर प्रकार के शोक का विनाश करने वाली हो। नमस्कार है हनुमान की स्वामिनी शक्ति को एवं नमस्कार है हाथ में बरछी धारण करने वाली को नमस्कार है उस कालका माता को जिसने हाथ में खड़ग धारण की हुई है और सदैव अनुकंपा करने वाली है।

The mother Goddess is oppressor of enemies and worshipped by all. She is the destroyer of Universe and creater as well as destroyer of all sorrows. Salutation to the Lordess of Hanuman and holder of spear in hand. Salutation to Kalika, the holder of sword in hand, and the merciful one.

नमो लंकुड़ेसा नमो नागर कोटी।।
नमो काम रूपा कमच्छिआ करोटी।।
नमो काल रात्री कपरदी कलिआणी।।
महां रिद्धणी सिद्ध दात्री क्रिपाणी।।२५।।

शब्दार्थ : नागर कोटी–ज्वाला मुखी स्वरूप। कमच्छिआ–सुन्दर नयनों वाली। करोटी–हाथ मे खप्पर रखने वाली। कपरदी–जटा जूट स्वरूप। कलिआणी–सुख स्वरूपा।

भावार्थ : नमस्कार है हनुमान की स्वामिनी देवी माता को और नमस्कार है तेरे ज्वाला मुखी स्वरूप को। नमस्कार है काम रूपा सुन्दर नयनों वाली देवी कि जिसने हाथ में खप्पर धारण किया हुया है। नमस्कार है तेरे काल रात्रि कराल स्वरूप को जो दुष्ट दैत्यों के लिये विनाशकारी है। तेरा जटा जूट स्वरूप सबके लिये कल्याणकारी है। नमस्कार है देवी माता को जो रिद्धियां सिद्धियां प्रदान करती है और कृपा करने वाली है।

Salutation to the Lordess of Hanuman and Goddess of Nagarkot. Salutation to the most beautiful Goddess Kamakhya of Kamrup and the holder of cranial bowel in her hand. Salutation to the supreme personifier of supernatural powers, performer of spiritual deeds and the gracious one.

नमो चतर बाही नमो असटबाहा।।
नमो पोखणी सरब आलम पनाहा।।
नमो अंबका जंबहा कारतिकयानी।।
म्रिड़ाली कपरदी नमो स्त्री भवानी।।२६।।

शब्दार्थ : चतर बाही–चार भुजाओं वाली। असटबाहा–आठ भुजाओं वाली। सरब आलम–अखिल विश्व। पनाहा–आश्रय देने वाली।

भावार्थ : नमस्कार है चार भुजाओं वाली चतुर्भुज और आठ भुजाओं वाली अष्टभुज देवी माता को जो अखिल विश्व का पोषण करने वाली है और सबको आश्रय देने वाली है। नमस्कार है देवी माता को जो जंभ दैत्य का वध करने वाली है और शिवजी के सुपुत्र कार्तिकेय का पोषण करने वाली है। नमस्कार है देवी माता के जटा जूट स्वरूप एवं श्री भवानी स्वरूप को।

Salutation to the four armed and eight armed Goddess. Salutation to the nourisher and protector of the whole world. Salutation to mother Goddess and the killer of Jambha and the power of Kartikeyan, the son of Lord Shiva. Salutation to Sri Bhavani, the matted hair Goddess, the power of Lord Shiva.

नमो देव अरदयारदनी दुसट हंती।।
सिता असिता राजक्रांती अनंती।।
जुआला जयंती अलासी अनंदी।।
नमो पारब्रहमी हरी सी मुंकदी।।२७।।

शब्दार्थ : अरदयारदनी–देवतों के शत्रुओं का हनन करने वाली दुर्गा। सिता–श्वेत। असिता–श्याम। राजक्रांती–राज्य की शोभा। अलासी–लास्य नृत्य करने वाली। पारब्रहमी–पारब्रह्म की शक्ति। हरी–विष्णु भगवान जैसी। मुकंदी–मुक्ति दाती।

भावार्थ : नमस्कार है देवतों के शत्रुओं का हनन करने वाली दुर्गा को। श्वेत स्वरूपा गौरजा, श्याम स्वरूपा कालिका, राज्य की शोभा एवं अनंत स्वरूपों वाली को नमस्कार है। ज्वाला रूप, विजय प्राप्त करने वाली, लास्य नृत्य करने वाली, आनंद प्रदान करने वाली देवी को नमस्कार है। नमस्कार है पारब्रह्म की शक्ति, विष्णु भगवान जैसी मुक्ति दाती को।

Salutation to the Goddess Durga, the annihilator of demons who oppress the dieties. Thou art fair complexioned Gaurja, the black complexioned Kali, the grandeur of the state and the eternal one. Salutation to the flame of effulgence, free from bondage, the performer of Laysa dance and blissful one. Salutation to the Almighty's power that is like Vishnu and bestower of salvation.

जयंती नमो मंगला काल कायं।।
कपाली नमो भद्द्रकाली सिवायं।।
दुरगायं छिमायं नमो धात्रीएयं।।
सुआहा सुद्धायं नमो सीतिलेयं।।२८।।

शब्दार्थ : भद्द्रकाली–महां माया दुर्गा, काली, जिसकी सोलह भुजाऐं है और महिषासुर दैत्य जिसकी पूजा करता है। सिवायं–कल्याणकारी शक्ति। धात्रीएयं–जनमदाती एव पोष्ण करने वाली। सुआहा–अग्नि की शक्ति। सुद्धायं–अमृत स्वरूप।

भावार्थ : नमस्कार है कालिका माता के सदैव विजयी एवं मंगलमई स्वरूप को। नमस्कार है तेरे कल्याणकारी महां माया दुर्गा स्वरूप को जिसने हाथ मे खप्पर धारण किया हुआ है। नमस्कार है दुर्गा माता को जो सब को क्षमा प्रदान करती है, सब की जन्मदाती एवं सबका पोषण करने वाली है। नमस्कार है देवी की अग्नि शक्ति, अमृत स्वरूप और सीतला माता को।

Salutation to the ever victorious, blissful and the very image of death. Salutation to the epithet of Lord Shiva, Bhadra Kali, the sixteen armed Goddess adored by the Mehkhasar demon and the benedictor of all. Salutation to Durga, the forgiver, the creator and the nurturer of all. Salutation to the power of the sacred fire, the nectar form and Sheetla the provider of coolness.

नमो चरबणी सरब धरमं धुजायं।।
नमो हिंगुला पिंगुला अंबकायं।।
नमो दीरघ दाड़ा नमो सिआम बरणी।।
नमो अंजनी गंजनी दैत दरणी।।२६।।

शब्दार्थ : चरबणी–चबा देने वाली। धरमं धुजायं–धर्मों की ध्वजा स्वरूपा। दीरघ दाड़ा–कराल दाँतों वाली।

भावार्थ : सभी दुष्ट दैत्यों को चबा जाने वाली और सभी धर्मों की ध्वजा–स्वरूपा देवी को नमस्कार है। सिन्धु (मकरान) देश में पूज्य हिंगुला, पिंगुला और अंबिका देवी को नमस्कार है। नमस्कार है कराल दाँतों वाली और श्याम स्वरूप वाली कालिका माता को। नमस्कार है तेरे माया स्वरूप और दुष्ट दैत्यों का विनाश करने वाले गंजनी स्वरूप को।

Salutation to the annihilator of all the demons and the standard bearer of religion. Salutation to the mother Goddess, known as Hingula, Pingula and Ambika. Salutation to the strong jawed Goddess. Salutation to the black complexioned Kali. Salutation to the illusionary form and the destroyer of the demons.

नमो अरध चंद्राइणी चंद्र चूड़ं।।
नमो इंद्र ऊरधा नमो दाड़ गूड़ं।।
ससं सेखरी चंद्रभाला भवानी।।
भवी भै हरी भूतराटी क्रिपानी।।३०।।

शब्दार्थ : अरध चंद्राइणी–मस्तिष्क में अर्द चंद्र धारण करने वाली। चंद्र चूड़ं–चाँद को मुकुट मे धारण करने वाली। ऊरधा–स्वर्ग मे रहने वाले राजा इंद्र की शक्ति का स्रोत। ससं सेखरी–मुकुट मे चंद्रमा धारण करने वाली। चंद्रभाला–मस्तिष्क में चाँद वाली। भवी–यम की शक्ति। भै हरी–भय को दूर करने वाली। भूतराटी–भूत प्रेतों के राजा शिवजी की शक्ति।

भावार्थ : नमस्कार है मस्तिष्क मे अर्द्धचंद्र धारण करने वाली को। नमस्कार है जिसके मुकुट मे चाँद सुशोभित हो रहा है। नमस्कार है स्वर्ग के राजा इंद्र की शक्ति के स्रोत को, नमस्कार है कराल दाढ़ों वाली को। मस्तिष्क मे चंद्रमा को धारण करने वाली और चंद्र को मुकुट में धारण करने वाली देवी माता को नमस्कार। यम की शक्ति, भय को दूर करने वाली, भूत प्रेतों के राजा शिवजी की शक्ति एवं कृपाण धारण करने वाली कालिका माता को नमस्कार है।

Salutation to the embodiment of moon and wearer of crescent moon in her crown. Salutation to the Goddess mother, the source of power of Indra, the Lord of heavens. Salutation to the Goddess with powerful jaws. Salutation to Bhavani whose forehead is like a moon and wears crescent moon in her crown. Thou art the power of Yamaha, the extincter of fear, the power of Lord Shiva, the king of Ghosts and the ever benevolent.

कली कारणी करम करता कमच्छिआ।।
परी पदमनी पूरणी सरब इच्छिआ।।
जया जोगनी जग्ग करता जयंती।।
सुभा सुआमणी स्रिसट जा सत्रु हंती।।३१।।

शब्दार्थ : कली कारणी–कलयुग का प्रसार करने वाली। जग्ग करता–यज्ञ करने वाली। सुभा सुआमणी–देवताओं की सभा की स्वामिनी। स्रिसट जा–सृष्टि को उत्पन्न करने वाली। सत्रु हंती–शत्रुओं का हनन करने वाली।

भावार्थ : कलयुग का प्रसार करने वाली, काम इच्छा की पूर्ति करने वाली देवी स्वयं ही है। देवी माता अप्सरा, पद्मिनी स्त्री के समान सभी इच्छाओं को पूर्ण करने वाली है। सब पर विजय प्राप्त करने वाली योगिनी एव यज्ञ इत्यादि कर्मों के करने वाली और सदैव विजयी रहने वाली देवी माता है। देवताओं की सभा की स्वामिनी, सारी सृष्टि को उत्पन्न करने वाली एवं शत्रुओं का हनन करने वाली दुर्गा देवी है।

Thou art the cause of Kalyuga, the performer of deeds and the Goddess of passion. Thou art the most beautiful and attractive fairy, fulfiller of the desires of all. Thou art the all subduer, performer of oblation and the ever victorious. Thou art the Lordess of the congregation of dieties, creator of the world and the destroyer of enemies.

पवित्त्री पुनीता पुराणी परेयं।।
प्रभी पूरणी पारब्रहमी अजेयं।।
अरूपं अनूपं अनामं अठामं।।
अभीतं अजीतं महा धरम धामं।।३२।।

शब्दार्थ : पुराणी–पुरातन। परेयं–परे से परे। प्रभी–तेज वाली। पूरणी–सर्व पदार्थों की पूर्ति करने वाली। अजेयं–सर्वदा विजयी।
भावार्थ : देवी माता अति पवित्र है, पुनीत है, सनातन है और परे से परे है। वह अत्यंत प्रभुता परिपूर्ण, सर्व पदार्थों की पूर्ति करने वाली, प्रभु की शक्ति और सर्वदा विजयी है। देवी माता रूप रहित और उपमा रहित है। उसका कोई एक स्थान नहीं, वह सर्वव्यापी है, वह निडर है, अपराजित है और महाधर्म का स्थान है।

Thou art pious, scared, eternal and beyond comprehension. Thou art the Mistress of radiance, glory, fulfiller of the desires of all, the power of the Almighty and invincible. Thou art without any form, extra ordinary beautiful, without any specific name and place. Thou art fearless, invincible and the supreme abord of all religions.

अछेदं अभेदं अकरमं सु धरमं।।
नमो बाण पाणी धरे चरम बरमं।।
अजेयं अभेयं निरंकार नित्तियं।।
निरूपं निरबाणं नमित्तियं अकित्तियं।।३३।।

शब्दार्थ : अछेदं–ना काटे जाने वाली। अभेदं–जिसका भेद ना पाया जा सके। बरमं–लोह कवच। अभेयं–भय से रहित।

भावार्थ : देवी माता को काटा नहीं जा सकता, उसका भेद नहीं जाना जा सकता, वह करम रहित है और शुभ धर्मों का स्वरूप है। नमस्कार है देवी माता को जिसके हाथ मे बाण है और शरीर पर लोह कवच धारण किया हुआ है। वह किसी से पराजित नहीं हो सकती और वह भय से मुक्त है। वह आकार रहित है और नित्य स्वरूप है। वह रूप रहित है, शांतचित है, सब का कारण रूप है और उसका काई कारण नहीं है।

Thou art impregnable, indiscrimate, intransitive and the righteous one. Salutation to the holder of arrow in hand and wearer of armour. Thou art invincible, fearless, formless and eternal. Thou art without form, emancipator, the cause of everyone but not created by anyone.

गुरी गउरजा कामगामी गुपाली।।
बली बरीणी बावन जग्गया जुआली।।
नमो सत्रु चरबाइणी गरब हरणी।।
नमो तोखणी सोखणी सरब भरणी।।३४।।

शब्दार्थ : गुरी–ज्ञानदाती। गउरजा–दक्ष प्रजापति गउर की स्पुत्री सती पार्वती। कामगामी–सुंदर चाल वाली। गुपाली–पृथ्वी की पालना करने वाली। बावन जग्गया–अवतार की शक्ति। सत्रु चरबाइणी–शत्रुओं को चबाने वाली।

भावार्थ : देवी माता ज्ञान की दाती, दक्ष प्रजापति गउर की सुपुत्री, सुंदर चांल वाली और पृथ्वी का पोषण करने वाली है। वह अति बलशाली, शूरवीर, बावन अवतार की शक्ति, यज्ञ की जगमग करती अग्नि है। नमस्कार है शत्रुओं को चबाने वाली और अहंकार को दूर करने वाली को। नमस्कार है सबको संतोष प्रदान करने वाली, सब के दुःखों का निवारन करने वाली और सबको भरपूर करने वाली देवी माता को।

Thou art provider of knowledge, Gaurja (daughter of Daksh Prajapati, also called Parvati), with elegant movements and the nourisher of earth. Thou art strong, gallant, power of the dwarf's incarnation of Almighty. Salutation to the annihilator of enemies and destroyer of their pride. Salutation to the mother Goddess who grants patience to saints, annihilator of their misfortunes and fulfiller of the desires of all.

पिलंगी पवंगी नमो चर चितंगी।।
नमो भावनी भूत हंता भड़िंगी।।
नमो भीम रूपा नमो लोक माता।।
भवी भावनी भविखयाता बिधाता।।३५।।

शब्दार्थ : पिलंगी–चीते समान चुस्त। पवंगी–पवन समान तीव्र चाल वाले अश्व की शक्ति। चर चितंगी–चित्त समान तीव्र विचरने वाली। भूत हंता–प्रेत आत्माओं को नष्ट करने वाली। भड़िंगी–भिड़ने वाली। भविखयाता बिधाता–भविष्य की विधाता।

भावार्थ : चीते के समान, पवन समान तीव्र चाल वाले अश्व जैसी रफतार से चलने वाली और चित्त समान तीव्र गति से विचरने वाली देवी माता को नमस्कार है। नमस्कार है कालिका देवी के श्रद्धा स्वरूप को जो प्रेत आत्माओं को नष्ट करने वाली और युद्ध मे शत्रुओं से भिड़ने वाली है। नमस्कार है वृहद कायावादी जगत माता को। देवी माता सुंदर श्रद्धा स्वरूप है और भविष्य की सब विधियों को बनाने वाली है।

Salutation to the mother Goddess who is fast paced like a leopard, with wind like fast movements of a horse and as fast as mind. Salutation to the fascinating, destroyer of all the wicked in war. Salutation to the gigantic form, salutation to the mother of the world, the charming, fascinating and the well known creator of all happenings.

प्रभी पूरणी परम रूपं पवित्री।।
परी पोखणी पारब्रहमी गाईत्री।।
जटी जुआल प्रचंड मुंडी चमुंडी।।
बरं दाइणी दुसट खंडी अखंडी।।३६।।

शब्दार्थ : परी पोखणी–भली प्रकार से पोषण करने वाली। गाईत्री–वेद विद्या की मूल रूप (गायत्री मंत्र)। जटी–जटायों वाले शिव की शक्ति। चमुंडी–चंड और मुंड दैंत की हरता। बरं दाइणी–वर देने वाली।

भावार्थ : देवी माता महान प्रभुता वाली है एवं परिपूर्ण है, सुंदर स्वरूप वाली एवं प्रमात्मा की पवित्रतम शक्ति है। वह अप्सरा रूप है, सबका पोषण करने वाली है, पारब्रह्म की शक्ति है एवं गायत्री मंत्र है। वह जटाधारी शिव की शक्ति प्रचंड तेज वाली मुंडमाल धारण करने वाली एवं चंड और मुंड राक्षसों का हनन करने वाली है। वह ही वरदाती एव दुष्टों का खंडन करने वाली परन्तु स्वयं अखंड स्वरूप है।

Thou art the Mistress of radiance and glory, fullfiller of desires of all, the most beauteous and chaste form. Thou art the most beautiful attractive fairy, the nourisher of all, power of the Almighty and the essence of Vedas. Thou art the power of matted hair Shiva, effulgence of intense fire, the wearer of garland of skulls and the killer of Chand and Mund demons. Thou art the bestower of blessings and slayer of the wicked but thouself can neve be fragmented.

सबै संत उबारी बरं बयूह दाता।।
नमो तारणी कारणी लोक माता।।
नमसतयं नमसतयं नमसतयं भवानी।।
सदा राख लै मो क्रिपा कै क्रिपानी।।३७।।

शब्दार्थ : बरं बयूह–शुभ आशीशों का खजाना प्रदान करने वाली। नमसतयं–नमस्कार है।

भावार्थ : देवी माता सब संतों का उद्धार करने वाली है और शुभ आशीषों का खजाना प्रदान करने वाली है। नमस्कार है संतों भक्तों को भव सागर से पार करने वाली लोक माता को। हे माता भवानी आपको मेरा बार बार नमस्कार है। हे कृपा करने वाली देवी माता सदैव ही मेरी रक्षा करना और मुझ पर तुम्हारी अनुकंपा सदैव ही बनी रहे।

Thou art the uplifter of all the saints and bestower of blessings. Salutation to the mother of the world, saviour and cause of all the causes. O Bhavani ! repeated salutations to thee, O Merciful Goddess mother ! please grant me thy protection and grace for ever.

चंडी चरित्र उसतत

अथ चंडी चरित्र उसतत बरननं।।
Narration of the appreciation of Chandi Charitter

भुजंग प्रयात छंद।।
Bhujang Prayat Chhạnd

भरे जोगणी पत्र चउसठ चारं।।
चली ठाम ठामं डकारं डकारं।।
भरे नेह गेहं गए कंक बंकं।।
रुले सूर बीरं अहाड़ं त्रिसंकं।।१।।

शब्दार्थ : पत्र–खोपरी का प्याला। चउसठ चार–अठसठ। नेह–मोह। गेहं–घर। कंक–कौआ। बंकं–छोटी गिद्धें। अहाड़ं–युद्ध का मैदान। त्रिसंकं–निरभै योद्धा।
भावार्थ : अठसठ जोगनियों ने अपने-अपने खोपरियों के प्याले रक्त से भरे हुए हैं। वे रक्त से तृप्त होकर अपने-अपने ठिकानों पर जा रही हैं। कौवे और गिद्ध भी अपने घरों के मोह के बंधे हुये वापिस घरों को जा रहे है। शूरवीर और निर्भय योद्धा युद्ध के मैदान में लावारिस पड़े हुये है।

The sixtyeight (68) yoginis (female ascetics) have filled their vessels made of human skull with blood. The yoginis having drunk the blood to their entire satisfaction left belching for their respective abodes. Even the crows and vultures infatuated with love for their homes had left for their abodes. The valient warriors only lay dead in the field uncared for.

चले नारदऊ हाथ्थ बीनर सुहाए।।
बने बारदी डंक डउरू बजाए।।
गिरे बाजि गाजी गजी बीर खेतं।।
रुले तच्छ मुच्छं नचे भूत प्रेतं।।२।।

शब्दार्थ : नारदऊ–नारद मुनी। बारदी–नंदी बैल वाले शिव जी। बाजि–घुड़ स्वार। गजी–हाथियों के स्वार।
भावार्थ : ऋषि नारद, जिनके हाथ में वीना सुशोभित हो रही है, युद्ध का अंत हो जाने पर वापिस लौट गये हैं। शिव जी भगवान भी, जो सुसज्जित नंदी बैल पर सवार हैं, डमरू बजाते हुये वापिस चले गये। घुड़सवार योद्धा और हाथियों के सवार शूरवीर रणभूमि में गिरे पड़े हैं। युद्ध के मैदान में टुकड़े टुकड़े हुये शूरवीर गिरे पड़े हैं और भूत प्रेत प्रमुदित होकर नृत्य कर रहे हैं।

The Rishi Narad has also left with lyre in his hand. Lord Shiva riding his Nandi Bull has also left beating his tambour. The soldiers, riders of elephants and horses lie dead in the battle field. Seeing the dust laden slain dead bodies, ghosts and witches dance with jubliation.

नचे बीर बैताल अद्धं कमद्धं।।
बधे बद्ध गोपां गुलित्राण बद्धं।।
भए साध संबूह भीतं अभीते।।
नमो लोक माता भले सत्रु जीते।।३।।

शब्दार्थ : बधे–मारे गये। बद्ध गोपा–गोपिये। गुलित्राण–फौलादी दस्ताने। अभीते–निर्भय। सत्रु–शत्रु।
भावार्थ : रणभूमि में वीर बैताल नृत्य कर रहे हैं और आधे कटे हुये धड़ तड़प रहे हैं। उन शूरवीरों ने शत्रुओं को मारने के लिये हाथों में गोपिये पकड़े हुये हैं और अपने हाथों की सुरक्षाके लिये फौलादी दस्ताने पहने हुये हैं। सारे संत, भक्त और देवता गन भय से मुक्त हो कर निर्भय हो चुके हैं। नमस्कार है उस जगत माता को जिसने भली भाँति समस्त शत्रुओं पर विजय प्राप्त की है।

The headless bodies and evil spirits are also dancing. The dancers who used to tie rattling bells to their waist and the soldiers who wore iron gloves are all dead. All the saints have now become fearless by shedding away their fears. Salutation to the mother of the world who has vanquished the enemies remarkably.

पड़हे मूड़ह याको धनं धाम बाढे।।
सुनै सूम सोफी लरै जुद्ध गाढे।।
जगै रैणि जोगी जपै जाप या को।।
घरै परम जोगं लहै सिधता को।।४।।

शब्दार्थ : धाम–घर। सूम सोफी–महां कायर।
भावार्थ : कोई मूर्ख भी यदि इस चंडी चरित्र वाणी का पठन करेगा उसके ग्रह मे धन संपदा की बढ़ोत्री होगी। महां कायर भी यदि इस वाणी को श्रवण करेगा वह अत्यंत शूरवीर बनकर युद्ध के मैदान में अग्रगण्य हो कर युद्ध करेगा। जो जोगी रात भर जागरण करके इस वाणी का जाप करेगा, आलस्य उससे दूर भाग जायेगा। वह जोगी श्रेष्ठ जोग और सिद्धता को प्राप्त करेगा।

Even if a fool reads these scriptures, there would be tremendous enhancement of wealth in his house. If an extreme coward listens to these scriptures, he would attain enormous strength to fight the enemies. If a yogi awakes throughout the night and recites these scriptures, he would become supreme yogi and would attain divine powers.

पड़ै याहि बिद्दयारथी बिद्दय हेतं।।
लहै सरब सासत्रान को मधय चेतं।।
जपै जोग सनयास बैराग कोई।।
तिसै सरब पुंनयान को पुंन होई।।५।।

शब्दार्थ : मधय–सारांष। सासत्रान–शास्त्र। चेत–ज्ञान की प्राप्ति।
भावार्थ : जो विद्यार्थी विद्या प्राप्ति की इच्छा से इस वाणी का पठन करेगा वह समस्त शास्त्रों का ज्ञाता होगा। जो कोई जोगी, सन्यासी या बैरागी इस चंडी चरित्र का जाप करेगा उसे समस्त पुण्यों की प्राप्ति हो जायेगी।

A student who reads these scriptures for the sake of knowledge would acquire the essence of all the scriptures. If a yogi, a sanyasi, a bairagi recites these scriptures, all his virtuous deeds would become fruitful.

दोहरा।।
Dohra

जे जे तुमरे धिआन को नित्त उठि धिऐ हैं संत।।
अंत लहैं गे मुकति फलु पावहिंगे भगवंत।।६।।

भावार्थ : हे आदि शक्ति दुर्गा माता ! जो जो संत, भक्त, प्रिय जन नित्य प्रातःकाल उठ कर तेरी आराधना करेंगे वे अंत समय मोक्षफल को प्राप्त करेंगे और उस अकाल पुरुष प्रभु मे अभेद होकर आवागमन के चक्रों से मुक्त हो जायेंगे।

All those saints who recite this daily would finally attain the fruit of liberation and realise God.

Bhagwati – The Primal Power

The Dasam Granth Sahib is a wonderful, unique and marvellous composition of Shri Guru Gobind Singh Ji. The reader is thrilled, blessed and enlightened with the enormous treasure of knowledge contained in these scriptures. His conception about the Almighty, His wonderful creations, the beauties and the bounties of the nature become absolutely clear. The magnificent vast store house of knowledge enumerated through these scriptures highlights the idealogical philosophy of the Vedas, the Puranas and the Upnishadas. The incarnations of Lord Vishnu, Brahma and Shiva have also been narrated elucidly. The different behaviours of women and above all the magnificent illustrious character of the revered Mother Bhagwati, who is the primal energy and the manifestation of the Almighty God have been described in a highly devoted manner by Sri Guru Gobind Singh Ji.

In Dasam Granth Sahib He has depicted very explicitly that Goddess Durga is the unknowable reality. She is the dazzling, radiant, resplendent light. She is infinite primal energy. She is the ever primal virgin and beginingless. She is invincible, fathomless and fearless energy. She is eternal and the origin of all. She is the divine light of the Lord prevailing in the universe. She is self radiant in all matters. It is immensely difficult to describe her extensive marvels. Words fail to express her benedictions, munificense and benevolence.

Numerous saints and scholars have tried their utmost but could not envisage her prowess. No one is so capable as to unravel her mysteries. It is almost impossible to comprehend her completely. Her genius can't be constrained. The entire universe sings sweet melodies in her praise and applause. She is the ubiquitous in the entire universe. Her boundless praise is beyond expression. None, but she herself is only capable of unravelling her own mysteries. Her marvels are beyond comprehension.

The primal energy is omnipresent, omnipotent and all pervasive. She is the invisible power and the infinite firmament. Her residence is apparent all over the universe. She resides in oceans, earth and the mountains. She is prominent in the three worlds and nine cosmic regions. She illuminates all the regions of the universe with her radiance. Her abode is heaven, nether world and the paradise. All the cosmos long for her benevolence, compassion and grace.

The Primal Power of the Almighty

The Goddess Mother Durga is the primal power of the Almighty and enjoys His immense love and affection. She is the personification of the totality of the power of Gods. She is ever blissful and keeps meditating on the Lord's name day and night. She herself has become a symbol of worship, because of her contemplation on the Lord Almighty. She is the resemblance and segment of the Almighty. She is the Lord's personal minister and adorns his abode. She is the divine light of the Lord prevailing in the universe. She is the God's greatest supplication power. She is the immaculate one, who is completely devoted to God. She is the purest one, the

king of kings and is immeasurable. She prostrates at the feet of the Almighty. She is the magnificent prime disciple of the Almighty and is in constant touch with Him. She is the initial illustrious queen with the Lord's grace. She can't be envisaged. She is the abysmal Godly power of Lord Shiva. She is the might of Lord Vishnu. She destroys demons and demolishes sufferings.

Ancient Scriptures

The ancient scriptures, The Puranas as well as Vedas hold mother Goddess in high reverence. The Devi Bhagwat Purana is entirely dedicated to many vulnerable aspects of the Goddess Durga. The Markandeya Purana brings out clearly the glorious and valorous deeds of Adi Shakti. In Rigveda Sri Sri Chandi is the first character and is named Gayatri Ved Mata. Gayatri is the maker of Rigveda. Every verse of Chandi is regarded as a mantra and the devotees get blessings by its repetition. In Rigveda, Durga is described in the form of fire, besides being referred as Adi Shakti known as Ratri Devi. The Sam Veda states that all the Gods and deities derive their strength from Adi Shakti the primal power. Yajurveda also refers to different images of Adi Shakti. The various aspects of the Goddess Durga as Kali, Karali, Manojoba Sulohita, Sudhumar Barna, Viswaruchi, Sphulingiri are mentioned in Atharveda Mundaka Upnishad.

The different eight mother forms of Shakti are Brahmi, Maheshwari, Kumari, Vaishnavi, Brarahi, Narasinghaindru, Chamunda and Smrita. The Goddess Mahamaya takes different forms to shower her piousest blessings on her devotees. The various names and forms of Divine Mother are worshipped with great devotion in all times.

'Durga' literary means difficult to approach or know. The meaning of this exhalted name stands for the annihilation of Asuras, care of physical, vocal and mental disorders; eradication of sin in any individual, annihilation of fear and enemy.

Images of the Infinite Power

Guru Gobind Singh Ji states that the infinite power embodies herself in different images. She is the reverent Devika, the mother of Lord Krishna. She is the beautiful eyed Naina Devi, the invincible power and the protector of the universe. She is Lord Krishna's playmate and His most beloved Radhika. She is also the beautiful queen Rukmani of Lord Krishna. She is the Kaushalaya the beloved and revered mother of Lord Rama. She is Anjani, the mother of Hanuman the most devoted disciple of Lord Rama. She is Renuka, the mother of Parsuram. She is Ahilya the wife of Rishi Gautam. She is the worshipped Saraswati, the most proficient in the Vedas. She is the immaculate creator that preserves the faith she dwells in the mountains and is the Parvati, the wife of Lord Shiva. She is the Lakshmi, the most beautiful and charming wife of Lord Vishnu.

She transformed herself into Narsingh and manifested from the pillar. With Her long nails She tore the belly of the great demon Harankash and killed him. She manifested as a turtle. She was the creator and destroyer of the demons Madhu and Ketab. She manifested as a boar and annihilated Harankashyap. She manifested as a dwarf, performed a great act of deception and banished the king Bal to Netherland. She manifested as Parsuram in the world and destroyed innumerable Kashatries. She again was born as Lord Rama and killed Ravana, the demon King of Lanka.

She manifested as a big fish and frolicked in the ocean. She destroyed Shankhasur demon. She was born as Lord Krishna and killed Kans and Kesi demons. She caught hold of wrestler Chandoor and annihilated him. She was evident as Jagannath and killed Gayasur Demon.

The most beauteous one

The Primal Power, The Bhawati, is the embodiment of effulgence. She is unparalleled charming, fascinating the most beautiful and the attractive fairy acknowledged by all. The great incarnate is ever new and ever just. This supreme flame is very healthy, stout and strong. She is the performer of super natural powers and the spiritual deeds. She has bound all the fourteen realms in her web of infatuation. This most gracious and compassionate mother adorns her forehead by wearing the crown decorated with the crescent moon. The most sacred, eternal mother is the mistress of radiance and beyond comprehension. She is fearless, chaste, invincible, impregnable, indiscriminate and the most righteous one.

The Goddess with her eight arms look very extraordinary and unique. She carries in her hands, the ringing bell, mace, trident, sword, conch-shell, bow and the arrows. The Goddess has a golden body and her eyes are like those of Wagtail (Khanjan) a bird with beautiful eyes. Her magnificent form is full of grandeur as if the Lord Creator has filled nectar in each limb. Moon is well known for its beauty but it is no match to her illustrious and charming face. No other comparison seems apt. Her beautiful face annihilates all the agonies. Her hair locks are like the snakes around the neck of Lord Shiva. Her eyebrows are just like Shiva's bow and her eyelashes are like arrows. Her waist is slim like

that of a lion. She is the beauty incarnate and holds a bow in one of her hands. On seeing her the Lotus and the Wagtail (Khanjan) feel vexed, the black bee wanders about falteringly in the forest and the fish is put to languor. Her sharp nose upsets the parrot, her neck upsets the pigeon and her sweet shrilling, melodious voice upsets the nightingale and they all wander restlessly in the forest. Her white even row of teeth excel the pomegranate. The beauty of her face is so shining that it provides light in whole of the world. She is an embodiment of such a beauty that She charms the heart and casts spell with a single look of her eyes.

Rider of lion

Guru Gobind SIngh Ji has described that the Primal Power Goddess Durga rides a lion, which possesses extraordinary qualities. It is as huge as the old mythological elephant. The hair of he lion look like arrows and also as trees grown on a yellow mountain. The lines on the back of the lion look like Jamuna flowing down from Summer mountain. The scattered black hair on the lion's body are like black bees sitting on the Jasmine flower. The distinct and well proportioned limbs and muscles give the impression of mountains that might have been separated from the earth by King Prithu with his powerful bows.

The Annihilator of the Demons

The Primal Power Goddess Durga annihilated all the proud, wicked, troublesome, robust, demons who boasted of their immortality and were terror to the dieties. To kill the demons and destroy the ignobles has been her divine tendency from the beginning. She

is the subduer of the invincible. The dieties and the demons were at dagger's drawn with each other. Whenever the furious demons drove the dieties out of heaven, the King Indra along with his other associates went to the Goddess Durga, yelped their agonies and besought her help. The compassionate and gracious mother took pity on their fate, consoled, solaced and promised them to restore the heaven back to them. She fought terribly, fearlessly and bestowed her benedictions on the ailing dieties by subjugating and killing the ferocious Demons and restoring them their heaven. She perished innumerable ferocious demons, a few of them being Rakatbeej, Dhumarlochan, Chand, Mund, Chamar, Mahikhasur, Karu Rach, Biralach, Shankhasur, Sumbh, Nesumbh along with their huge armies.

The Goddess enlightens her disciples with knowledge of Almighty and the Universe. She gives magical power and wisdom to her devotees. She has triumphed over death and can't be caught in the web of mortality. Her praise is being sung in all the three worlds and still she is beyond comprehension. Her kingdom is eternal and all the sages pray to her day and night. She enlightens the brain of her devotees with the knowledge of Vedas. She is the fiery flame of holy fire. The Mother Bhagwati is the possessor of great magnificence and the supreme might. She is the obliterator of ego. She is the brave warrior who travels on the earth and the constellation. She is the beautiful eternal power, who is the saviour of the universe. She bestows salvation and favours ceaselessly. She is the compassionate mother, who nourishes and takes care of all. She is the fulfiller of all the desires like mythological tree (Kalp tree) and Kamdhenu, the mythological heavenly cow. She with her miraculous

eyes is the possessor of eight miraculous powers. She exterminates evil and is the nurturer of the universe. She gives birth to the universe, shrouds it within herself, then terminates it altogether in the twinkling of an eye. She is born in every aeon. She created all the marvellous wonders during all aeons. She is benevolent on all the cosmos. She enacts as nature and performs wonderous marvels. Millions of Suns and Moons yield radiance with her eminence. She is the greatest unconquerable and exterminates all the agonies and sufferings. She is the visible and invisible force predominating all. She is the most gracious creator of the universe. She is the saviour of all the saints and ascetics. She resides in all. She is immaculate and unique. She is the sustainer of the entire universe. She is the all knowing mother of the universe. She bestows peace and prosperity with all her mystical and supernatural powers. Mother Durga grants eternal salvation to the devotees who chant prayers in her praise daily. Their sufferings, illness, sorrows, fears, torment vanish away and they attain blissfulness, harmony, prosperity and tranquility.

The Adi Shakti is the source and substance of all the creations, the mind and life. She is the inscrutable power by which the whole universe is permeated and energised. She is the personification of all the wealth, power and virtues. She bestows both material and spiritual wealth and annihilates the Asuras. She resides in the intellect of human beings. She is the supreme truth described in all scriptures. She is all forgiving, omniscient, omnipresent and omnipotent.

प्रिं० बेअन्त कौर

प्रिं० बेअन्त कौर जी का साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण स्थान है। आपने पंजाबी, अंग्रेजी तथा हिन्दी भाषा में अनेकों विषयों पर अपनी सुन्दर लेखनी द्वारा अनूठी छाप छोड़ी है। अपनी भाषा को सुदृढ़ बनाने हेतु ही आपने पंजाबी, अंग्रेजी में एम. ए. किया एवम् हिन्दी में साहित्य रत्न की डिग्री प्राप्त की।

आपने अध्यापन के क्षेत्र में रहकर भी शिक्षा को एक नया आयाम दिया। आपको विभिन्न संस्थाओं में कार्य करने का अवसर मिला और आपने अपने अनुभव का भरपूर प्रदर्शन भी किया। अध्यापन कार्य और साहित्यिक योगदान के लिए आपको कई बार सम्मानित भी किया गया।

आपकी साहित्य में रूचि बहुत छोटी उम्र से पनपने लगी थी। आपकी अनेकों रचनाएँ राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही है, जो क्रम आज भी जारी है। आपने कई पुस्तकें लिखकर साहित्य को अपने ढंग से समृद्ध किया है। आपने गुरू गोबिन्द सिंह जी की लगभग सभी रचनाओं का सूक्ष्म रूप से अध्ययन किया है। यही उनका लक्ष्य भी है और साधना का विषय भी, जिस ने उनको एक नई जीवन दिशा और प्रेरणा दी।